भगत भगवान

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगतन संग वसे भगवन्त, भय भयानक सदा सहाईआ। मेल मिलावा साचे सन्त, हरि सतिगुर आप मिलाईआ। जुग जुग बणाए साची बणत, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। एका नाम जणाए मणीआ मंत, दूसर अवर ना कोई पढ़ाईआ। देवे वड्डिआई विच्च जीव जंत, जीवण जुगत इक्क समझाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, बेअन्त सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन साचा मेल मिलाईआ।

भगत भगवान इक्को राह, एका दर सुहाइंदा। एका देवे सच सलाह, साचा नाम जणाइंदा। इक्क वखाए सच मकां, सचखण्ड दुआरा सोभा पाइंदा। इक्क जपाए आपणा नां, नाउँ निरँकारा आप समझाइंदा। इक्क इकल्ला देवे थां, थान थनंतर आप सुहाइंदा। एकंकार पकड़े बांह, हरिजन आपणे आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणे रंग रंगाइंदा।

भगतन मीता एकंकार, अकल कला वडयाईआ। जुग जुग पैज दए सवार, लोकमात होए सहाईआ। लक्ख चुरासी करे पार, जम की फासी तोड़ तुड़ाईआ। नाम उदासी इक्क खुमार, एका रंग वखाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, किरपन आपणे गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे माण वडयाईआ।

भगतन मीता हरि गोबिन्द, अकल कला अखवाया। जुग जुग मेटे झूठी चिन्द, चिन्ता चिखा ना रूप वटाया। दया कमाए गुणी गहिंद, गहर गम्भीर सच्चा शहनशाहया।

अमृत धार वहाए सागर सिंध, सर सरोवर इक्क वखाया। हरिजन बणाए साची बिन्द, पिता पूत नाउँ वडिआया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग वखाया ।

भगतन मीता हरि निरँकारा, निरगुण निरवैर खेल खलाईआ। जुगा जुगन्तर कर पसारा, पारब्रह्म प्रभ वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी पार किनारा, थिर कोई रहण ना पाईआ । कलिजुग अन्तम खेल न्यारा, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। धाम अव्वलड़ा इक्क दरबारा, दरगाह साची दए वडयाईआ। शब्द संदेश इक्क जैकारा, एका नाअरा लाईआ। एका मन्दर इक्क दुआरा, दर दरवाज़ा इक्क खुल्हाईआ। एका नूर परवरदिगारा, बेऐब बेपरवाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहज सुभाईआ।

भगतन मेला हरि भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ । एका देवे नाम निधान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म पढ़ाईआ। निरगुण जोत नूर महान, दीपक दीआ करे रुशनाईआ। अमृत आत्म पीण खाण, आसा तृष्ना दए गवाईआ। नाम वखाए सच बबाण, मेहरबान आप समझाईआ। आपे होए जाणी जाण, घट घट आपणा रूप वटाईआ। गुरमुख साचे चतुर सुजान, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला लए मिलाईआ।

भगतन मेला सच दुआर, बंक दुआरी आप कराइंदा। देवे दरस अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी कर खुआर, सभ दा पन्ध मुकाइंदा। लहणा देणा गुर अवतार, लोकमात वखाइंदा। भगत भगवन्त कर उजिआर, एका चन्द चढ़ाइंदा । नव नौं खेल अपार, पुरख अबिनाशी आप कराइंदा। सृष्ट सबाई करे विचार, लक्ख चुरासी फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां संग आप निभाइंदा ।

भगतां संग साचा मीत, मित्र प्यारा संग निभाईआ। आपे बैठा रहे अतीत, दर घर साचे सोभा पाईआ। नाम जणाए साचा गीत, गीत गोबिन्द आप अलाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोई वडयाईआ। वसणहारा धाम अनडीठ, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ । आदि जुगादी जाणे आपणी रीत, लेखा लेख ना कोई रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणा भेव चुकाईआ।

भगतन भेव देवे दस्स, दहि दिशा उठ धाया। लोकमात हरि आए नस्स, निरगुण वेस वटाया। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, आसा तृष्ना दए मुकाया। लेखे लाए पवण सवास, जिस जन हरि जू हरि हरि गाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन नाम इक्क वडिआया।

भगतन नाम वड्डा वड, हरि वड्डा सच वडिआइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों कढ्ढ, आपणा मेल मिलाइंदा। लोआं पुरीआं कराए पार हद्द, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड वंडाइंदा। इक्क सुणाए साचा नद, अनहद नाद वजाइंदा। अमृत पिआए साची मध, मधुर नैण सेव कमाइंदा । जुग जुग आपणे दुआरे आपे सद्द, सदके वारी घोली घोल घुमाइंदा। कलिजुग अन्तम दे के जावे अद्ध, साचा हिस्सा आप वंडाइंदा। भगत बणाए आपणी यद्द, भगवन आपणा बंस सुहाइंदा । कोटन कोट भार गए लद्द, हौला भार ना कोई रखाइंदा। अन्तम परदा देवे ना कोई कज्ज, ख़ाली हत्थ सर्ब वखाइंदा। जो घड़िआ सो जाए भज्ज, थिर कोई रहण ना पाइंदा । भगत हरि भगवन दुआरे जाए सज, दर घर साचे सोभा पाइंदा। लोकलाज मात तज, तशकर आपणा डेरा लाइंदा। एका चढ़े नाम जहाज़, सतिगुर पूरा आप चढ़ाइंदा। शब्द अगम्मी मारे आवाज़, आवा गवण ना कोई फिराइंदा। एथे ओथे रक्खे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। सीस जगदीश सोहे ताज, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। धुरदरगाही सच्चा राज, शाह पातशाह आप कमाइंदा । जन भगतां देवे इक्को दाज, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत सदा सलाहिंदा।

भगत सलाहे हरि भगवन्त, गुण महिमा आप जणाईआ। धन्न वड्डिआई साचे कन्त, घर मंगल वज्जे वधाईआ। हरिजन चोली रंगे बसन्त, काया कप्पड़ आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन लेखा दए मुकाईआ।

भगवन भगतन लेखा मुक्कणा, कलिजुग अन्तम वार। पारब्रह्म प्रभ एका उठणा, निरगुण नूर करे उजिआर। जूठा झूठा बूटा पुट्टणा, देवे जड़ुं उखाड़। बिन अमृत सभ ने सुक्कणा, लक्ख चुरासी होए खवार। सिँघ शेर इक्को बुक्कणा, निरगुण जोत शब्द भबकार। शाह पातशाहां अग्गे झुकणा, ना कोई सके सीस उठाल। गुरमुख हरि जू आपणी गोदी चुक्कणा, चुक चुक करे प्यार। दो जहानां पैंडा मुक्कणा, पान्धी बण ना चले कोई रफ़तार। साहिब सुलतान अग्गों पुजणा, भगत भगवान लए उठाल। लक्ख चुरासी दीवा बुझणा, ना सके कोई बाल। लहणा चुके एका दूजणा, तीजे होर ना कोई सवाल। चौथे घर गुरमुख विरले झुजणा, नाता तोड़ काल महांकाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए संभाल।

सदा संभाले करे प्रितपाल, प्रितपालक वड वडयाईआ। वसणहारा सचखण्ड सची धरमसाल, दरगाह साची सोभा पाईआ। कलिजुग अन्तम भेव निराल, निरगुण आपणा आप छुपाईआ । जगत जुग अव्वलड़ी चाल, चाल निराली इक्क रखाईआ। सन्त सुहेले लए भाल, गुर चेले वेख वखाईआ। आपे चले नाल नाल, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी जो घालण गए घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत दए वडयाईआ।

भगत वडिआया आप प्रभ, आपणी किरपा धार। लक्ख चुरासी विच्चों लभ्भ, आपे दिता दरस दिखाल। दर दुआरे आपे सद्द, किरपा करे आप किरपाल। लक्ख चुरासी नालों कीता अड्ड, इक्क बहाए सची धरमसाल। बंस बणाए साची यद, विश्व रूप दए वखाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतन बणे सदा प्रितपाल।

प्रितपाले सार समालदा, सरगुण निरगुण मित। लेखा जाणे शाह कंगाल दा, लक्ख चुरासी करे हित। रूप वटाए आप दलाल दा, प्रगट होवे नित नवित्त। नाता तोड़ जगत जंजाल दा, इक्क सुहाए साची रुत्त। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल अबिनाशी अचुत।

अबिनाशी अचुत दीन दयाला, भगतन संग समाया। कलिजुग अन्त अव्वलड़ी चाला, वेद कतेब भेव ना आया। भगत भगवन्त आपे भाला, फड़ आपणा मेल मिलाया। एका दस्सया राह सुखाला, सोहँ साचा जाप जपाया। नेत्र दर्शन साची माला, साची सेवा हत्थ मणका मन भवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत लए जगाया।

भगत जगाए खोले जाग, आलस निंदरा ना कोई वखाईआ। आत्म अन्तर इक्क वैराग, वैरागी पुरख आप उपजाईआ। साक सज्जण सैण सय्या त्याग, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। मेला मेल ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। एका देवे धुर दी दात, दात अनमुलड़ी आप वरताईआ। आप बुझाए सच करामात, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। अक्खर वक्खर सुणाए गाथ, गाथा एका एक वडयाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे घाट, घाटा कोई रहण ना पाईआ। इक्क खुलाए साचा हाट, लोक परलोक देण गवाहीआ। खुशी मनाए त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं वज्जे वधाईआ। भगतां देवे भगवन साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। राह तक्के रामा सुत दसराथ, नेत्र नैण उठाईआ। कवण वेला मेला होए तत्तव आठ, तत्त तत्त गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतन सदा सहाईआ।

भगतन सदा सहायक, सो पुरख बली बलवाना। आदि जुगादी सच्चा नाइक, भूपत भुप राज राजाना। ना कोई शरअ ना शराइत, लाशरीक इक्क मेहरवाना। ना कोई अन्धेरा ना तरीक, नूरो नूर डगमगाना। आदि जुगादि वसे नज़ीक, निज घर साचा इक्क सुहाना। भगतन करे आप प्रीत, पारब्रह्म वड मरदाना। कलिजुग अन्तम साची रीत, सतिजुग साचा बंने गाना। लक्ख चुरासी परखे नीत, हर घट वेख वखाना। गुरमुख विरला गाए गीत, जिस सुणयां धुर तराना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन संग सदा निभाणा।

भगतन संग निभे तोड़, हरि जू मता पकाया। निरगुण चढ़या साचे घोड़, शाह सवार फेरा पाया। दो जहानां आपे दौड़, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाया। जन भगतां

बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ मेघ बरसाया। रस मिट्ठा करे रीठा कौड़, कूड़ी क्रिया दए गवाया। जन भगतां कारज जाए सौर, सो पुरख निरँजण सेव कमाया। आपे वेखे करे आपणा गौर, गहर गवर वेस वटाया। सति पुरख निरँजण आपणे हत्थ पकड़ी डोर, चारों कुण्ट रिहा भवाया। लेखा चुकाए पंज चोर, ठग्ग कोई रहण ना पाया। नाता तोड़े अन्ध घोर, साचा नूर करे रुशनाया। माया ममता ना पाए शोर, छौहर आपणा बल वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया।

तारन को हरि इक्को इक्क, आदि जुगादि समाइंदा। तिस साहिब कोल साची भिक्ख, जुगा जुगन्तर आप वरताइंदा। जिउँ भावे तिउँ देवे लिख, तिस दा लेखा ना कोई मिटाइंदा। वड वड्डिआई गुरमुख विरले पाया सिख, साची सिख्या जिस समझाइंदा। मेल मिलाए आपणा तिस, तीव्र इच्छया पूर कराइंदा। एथे ओथे साचा हिस्स, वंडण वंड आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणी गोद बहाइंदा।

भगतन सोहे सचे घर, भगवन आप सुहाया। निरभउ चुकाए झूठा डर, भय अवर ना कोई वखाया। आपणी किरपा आपे कर, नर नरायण मेल मिलाया। अंदर मन्दर आपे वड़, सच सिँघासण सोभा पाया। सन्त सुहेले आपे फड़, आपणी बूझ बुझाया। भगत भगवान लाए लड़, एका पल्लू गंढ वखाया। लेखे लाए नारी नर, जिस जन आपणी दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन भगतां होए सहाया ।

भगत सारे रहे हस्स, आपणी खुशी मनाईआ। वेखो साडे होया वस, घर साचे सेव कमाईआ। आपणी पूरी करे आस, भगतां दर्शन पाईआ। भगतन करे जोत प्रकाश, निरगुण नूर टिकाईआ। सदा सुहेला बण बण वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। करन आया कारज ख़ास, ख़ाहश इक्को इक्क रखाईआ। भगत दुआरा लवां तराश, आप आपणी वंड वंडाईआ । जुग जुग दी मेरी शाख़, शनाख़त आपणे हत्थ रखाईआ। साचे भगतां कढ्ढे ना कोई सुराख़, सोई सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उपाईआ ।

हरि भगत सारे कहण, वाह वा शुकर मनाया। हरि जू भगतां आए लैण, निरगुण वेस धराया। साडा चुक्के लैण देण, पिछला करज़ा रिहा मुकाया। आपे दरस पेखे नैण, नैण नैणां नाल मिलाया। सखा सहाई बणे सैण, सज्जण आपणा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतन आप समाया।

भगत कहण हरि जू दास, दर दर फेरा पाईआ। किसे हत्थ ना आए पृथ्मी आकाश, घर साडे आवे वाहो दाहीआ। बिन भगतां रहे निरास, धीरज धीर ना कोई जणाईआ। साचा करे ना कोई बलास, भोगी बणी सर्ब लोकाईआ। बिन हरि भगत भगवन किसे दर ना करे निवास, मन्दर दए ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगतां रंग चढ़ाईआ।

भगत कहण बध्धी डोर, हरि जू आपणे तन्द बंधाया। जिध्धर चाहीए लईए तोर, तोरा मोरा मोह चुकाया। भगवान रक्खे भगतां लोड़, जुग जुग भगतां होए सहाया। कलिजुग अन्तम टुट्टी लए जोड़, आप आपणा बंधन पाया। आपणे नाल लए तोर, साचा संग रखाया । जोरावर ना रखाए कोई ज़ोर, जाबर जबर ना रूप वटाया। होए सहाई सदा अन्धघोर, अन्धले राह रखाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां मार्ग आप चलाया। (७ मध्घर २०१८ बिक्रमी प्रीतम सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि आपे भगत आप भगवन्त, भगती रूप आप अखवाईआ। आपे साध आप हरि सन्त, सांतक सति आप हो जाईआ। आपे नार आपे कन्त, नर नरायण आप अखवाईआ । आपे आदि आपे अन्त, मध आपणी खेल कराईआ। आपे नाद धुंन आपे मंत, आपे रागी राग अलाईआ। आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नण आप हो जाईआ। आपे रविआ लक्ख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणा आसण लाईआ। आपे रुत्तड़ी रुत्त बसन्त, पत डाली आप महकाईआ। आपे महिमा होए अगणत, आपे लिख लिख लेख समझाईआ। आपे भुक्ख आपे नंगत, आपे तृष्ना रिहा वधाईआ। आपे दरवेश दर बणे मंगत, आप घर घर अलख जगाईआ। आपे जेरज आपे अंडज, उत्भुज सेतज आपणा खेल खिलाईआ। आपे बोध गिआता पंडत, आपे हरफ़ हरफ़ रिहा सलाहीआ। आपे करे सर्ब खण्डत, खण्डा खड़ग आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ।

आपे भगत आप भगवान, आपे साची खेल खलाइंदा। आपे जीव जंत जहान, आपे जुग जुग वेस वटाइंदा। आपे दाता आपे दान, देवणहारा आप अखवाइंदा। आपे गोपी आपे काहन, मण्डल रास आप रचाइंदा। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान, समुंद सागर आपे वेख वखाइंदा। आपे शब्द नाद धुंन कान, आपे राग रागनी खेल खलाइंदा। आपे शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, सुलाहकुल आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलायंदा।

आपे भगत आपे भाउ, निरभउ आपणा खेल खलाईआ। आपे प्रेम आपे चाउ, आपे मिल मिल खुशी मनाईआ। आपे वसे हर घट थाउँ, आपे लुक लुक मुख छुपाईआ । आपे नगर खेड़ा वसाए गराउँ, गृह गृह आपणा आप धराईआ। आपे पकड़णहारा बाहों, आपे धक्का रिहा लगाईआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे बालक रूप वटाईआ। आपे करे सच नयाउँ, आपे हुक्मी हुक्म सुणाईआ। आपे वसे थल अस्गाहों, जल थल आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

आपे भगत आपे नाम, आपणी करनी आप कराइंदा। आपे अमृत आपे जाम, भर प्याला आप पिआइंदा। आप रहीम आप राम, आपे रम रम खेल खिलाइंदा। आपे करता आपे काम, आपे भुगत वेस वटाइंदा। आपे जुगता बण बण दए कलाम, आपे निउँ निउँ सलाम बुलाइंदा। आपे रव सस तेज भान, आपे नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे ज़िमी आप असमान, ख़ाकी ख़ाक हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धराइंदा।

आपे भगत आपे रंग, रंग रंगीला आप अखवाईआ। आपे सेज आप पलंघ, आपे जुग जुग रिहा हंढाईआ। आपे डोर आप पतंग, आपे गुडीआ रिहा चढ़ाईआ। आपे नाद आप मरदंग, सच मरदंगा आप सुणाईआ। आपणे मन्दर आपे लंघ, हरि आपे वेख वखाईआ । आपे गीत आपे छन्द, आपे गा गा खुशी मनाईआ । आपे रस आप अनन्द, महां अनन्द आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप दृढ़ाईआ ।

आपे भगत आप सपूत, आपे आपणी खेल कराइंदा। आपे ताणा पेटा सूत, आपे आपणी बणत बणाइंदा। आपे सुत दुलारा पूत, आपे दाई दाया सेव कमाइंदा। आपे आदि जुगादि रहे ऊत, बिन भगतां कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा।

आपे भगत आपे मित, मित्र प्यारा आप अखवाईआ। आपे प्रेम आपे हित्त, नित नवित्त आप वखाईआ। आपे काया आपे खेत, आपे अमृत मेघ बरसाईआ। आपे रुत्त बसन्ती चेत, आपे ख़िज़ां रूप वटाईआ। आपे वसे नेतन नेत, दूर दुराडा आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणा भेत, भेव होर ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

आपे भगत आपे कार, हरि करनी आप कमाइंदा। जगत जुग सच विहार, सति पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरख़ सोग तों वसे बाहर, चिन्ता दुःख ना कोई वखाइंदा। इक्को जोग अगम्म अपार, अलख निरँजण आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग लाइंदा।

भगतां देवे इक्को जोग, जोगी जुगत आप जणाईआ। जन्म जन्म दा कट्टे रोग, रोगीआं रोग गवाईआ। मेल मिलाए धुर संजोग, बण संजोगी वेख वखाईआ। नाम निधान चुगाए चोग, सोहँ हँसा मोती मुख रखाईआ। नाम निधाना अगाध बोध, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। कर्म कांड प्रभ आपे सोध, जन भगतां लए तराईआ। कलिजुग अन्तम पहली करे मोहत, मोह ममता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सैहज सुभाईआ ।

आपे भगत आपे दास, दासी बण बण सेव कमाइंदा। आपे वसे सदा पास, घर साचे सोभा पाइंदा। आपे पुरख आप अबिनाश, अबिनाशी पद आप हो जाइंदा। आपे मण्डल आपे रास, आपे सूरज चन्द नचाइंदा। आपे गुण आपे तास, सर्ब गुणवन्ता आपणा खेल खलाइंदा । आदि जुगादि ना होए निरास, निरासता रूप ना कोई वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां मार्ग इक्क वखाइंदा।

आपे जगत आपे राह, रहबर बण बण सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी मिलण दा रक्खे चाअ , चाउ घनेरा सचे माहीआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, फड़ फड़ बेड़ा आप तराईआ। कोट जन्म दे बख्शे गुनाह, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। दरगाह साची देवे पनाह, चरन कँवल शरनाईआ। करे कराए सच निआं, साचे तख्त बैठ सच्चा शहनशाहीआ । फड़ फड़ हँस बणाए कां, कागों हँस उडाईआ। निथाविआं देवे थां, निओटियां इक्को ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सालाहीआ।

आपे भगत आपे गुण, गुणवन्ता आप अखवाईआ। जुग जुग पुकार रिहा सुण, जुग करता सच्चा माहीआ। लक्ख चुरासी छाण पुण, नौं सत नौं सत वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां देवे नाद धुन, धुन आत्मक इक्क सुणाईआ। लेखा जाणे कुलो कुल, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वडयाईआ।

आपे भगत आपे दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्लाईआ। आपे जोत नूर निराकार, आपे पंज तत्त डेरा लाईआ। आपे नाम शब्द खुमार, आपे अमृत धार वहाईआ। आपे सांतक सति ठंडा ठार, आपे अगन रूप वटाईआ। आपे जुग जुग लै अवतार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। आपे लक्ख चुरासी करे ख़बरदार, बण बण सेवक सेव कमाईआ। आपे भगतां करे सच प्यार, भगवन आपणी दया कमाईआ। हरिजन मेला एका वार, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। गुर चेले सोहण बंक दुआर, दर दर खुशी मनाईआ। करे प्रकाश जोत उजिआर, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे थाउँ थाईंआ।

आपे भगत आपे रूप, आपे राग रंग अलाईआ। आपे निरगुण सति सरूप, आपे सरगुण रूप वटाईआ। आपे हवण आपे धूप, आपे सुगंधी रिहा समाईआ। आपे वसे चारे कूट, दहि दिशा आपे फेरा पाईआ। आपे जूठ आपे झूठ, आपे सच सुच्च दृढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ ।

आपे भगत आपे सुख, सुख सागर आप अखवाइंदा। आपे मानस आप मनुक्ख, मानव आपणी खेल कराइंदा। आपे दस दस मास बह लुक, आपणा परदा आपे पाइंदा। आपे निरगुण सरगुण हो के पए उठ, आपणा बल आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइंदा।

आपे भगत आपे धर्म, धरनी धवल धरत वडयाईआ। आपे कर्म आपे कुकर्म, नेहकरमी आप हो जाईआ। आपे लज्जया आपे शरम, हया आपणे अंग वखाईआ। आपे भय आपे भेव आपे भरम, आपे भयानक रूप वटाईआ। आपे जीवन आपे मरन, आपे मर मर जीव प्रगटाईआ। आपे करनी आपे करन, करता पुरख आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ।

आपे भगत आपे नेम, आपे साची कार कमाइंदा। आपे अगनी आपे हेम, आपे खण्ड बहि बहि ध्यान लगाइंदा। आपे बानर आपे बेन, आपे बहि बहि खुशी मनाइंदा। आपे सागर आपे सैन, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा।

आपे भगत आपे दात, दर साचे आप वरताईआ। आपे मज़्हब आपे ज़ात, आपे शरअ वंड वंडाईआ। आपे खण्डां ब्रह्मण्डां वसे कायनात, आपे लोक परलोक रिहा समाईआ। आपे घट घट वेखे मार झात, आपे रूप रंग ना कोई वखाईआ। आपे खेल करे बहु बिध भांत, आपे जुग जुग वेस वटाईआ। आपे बैठा रहे इक्क इकांत, सच महल्ले सोभा पाईआ। आपे भगतां पुच्छे वात, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। आपे जाणे पूजा पाठ, आपे पढ़ पढ़ करे पढ़ाईआ। आपे तीर्थ आपे ताट, सर सरोवर आप अखवाईआ। आपे पार किनारा घाट, आपे पत्तण सच्चा माहीआ। जन भगतां मुक्के वाट, आपणा पन्ध मुकाईआ। शब्द विछौणा साची खाट, पुरख अबिनाशी सेज वछाईआ। दीपक जगे इक्क ललाट, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

आपे भगत आपे रस, अनरस आपणी खेल कराइंदा। आपे पूरी करे आस, आसा निरासा हो हो मुख छुपाइंदा। आपे पवण आप सवास, आपे अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। आपे शाहो आप शाबाश, आपे सह सह हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराइंदा। आपणा बल हरि जू धर, लोकमात वडयाईआ । जुग चौकड़ी जाए हर, लोकमात रहण ना पाईआ। गुर अवतार सेवा कर, अन्तम मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

बेपरवाह खेल खलाया, आदि अनादी धार। जुग चौकड़ी वेख वखाया, कोटन कोट जुग बीते विच्च संसार। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाया, शिव शंकर करे प्यार। लक्ख चुरासी बंधन पाया, आत्म परमात्म खेल अपार। गुर अवतार काया चोला सर्ब हंढाया, आवण जावण वारो वार। धुर फ़रमाणा ढोला इक्को गाया, नाद धुन जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे खेल अपार।

जुग जुग करे खेल अपर अपारा, अपरंपर आप कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा,

जोती जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, अन्त नज़र कोई ना आईआ। कलिजुग वरते विच्च संसारा, चार कुण्ट लए अंगढ़ाईआ। धूआंधार होए अन्धयारा, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। जीव जंत रोवे ज़ारो ज़ारा, गिरयाज़ार सुणाईआ। चारों तरफ आए हारा, जित रूप ना कोई वटाईआ। हरि का मिले ना नाम अद्धारा, हरि की पौड़ी ना कोई चढ़ाईआ। फड़ फड़ धक्के जीव गवारा, पढ़ पढ़ लिखत ना कोई मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ।

साचा खेल श्री भगवान, आपणा आप कराइंदा। लक्ख चुरासी मार ध्यान, जीव जंत वेख वखाइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुजान, पूरब जन्म संग निभाइंदा। अट्ठे पहर करे ध्यान, प्रभ दर्शन राह तकाइंदा। कवण मेल मिलाए आण, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा।

(१७ मध्घर २०१८ बिक्रमी करतार कौर बलवन्त कौर)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत भगवान साचा रंग, श्री भगवान आप चढ़ाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां आपे लंघ, दो जहान वाली लोकमात फेरा पाइंदा। गीत सुहाग अगम्मी छन्द, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। नाता तोड़ बत्ती दन्द, आत्म अन्तर बूझ बुझाइंदा। सच सुहञ्जणी सेज पलघँ, घर घर विच्च आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा।

भगत भगवान एको धार, आदि जुगादि रखाईआ। निरगुण सरगुण लए अवतार, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। रोग सोग दर्द निवार, दर्दी दर्द वंडाईआ। एका देवे नाम खुमार, राम नाम पढ़ाईआ। एका मन्दर दए वखाल, घर मेले सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सैहज सुबाईआ।

भगत भगवान इक्को वेस, आदि अन्त जणाइंदा। वसणहारा साचे देस, देस दसन्तर सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण लए वेख, नेत्र नैण नैण खुल्हाइंदा। लेखा जाणे रिखी केश, गवरधन आपणे रंग रंगाइंदा। सेवक सेवा ब्रह्मा विष्न महेश, साची सेवा इक्क जणाइंदा। भगत भगवन्त लिखणहारा लेख, लेखा आपणे हत्थ रखाइंदा। दाता दानी जोधा सूरबीर नर नरेश, शाह पातशाह नाउँ धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगाँ जुगन्तर जन भगतां आप वडिआइंदा।

भगत भगवन्त एका ओट, आदि जुगादि रखाईआ। वसणहारा साचे कोट, सचखण्ड दुआरा इक्क समझाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गवाईआ। नाम नगारे

लाए चोट, अनहद नादी नाद वजाईआ। जगत वासना कढे खोट, माया ममता मोह मिटाईआ। देवे नाम राम अतोट, अतुट भंडार इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका रंग वखाईआ।

भगत भगवन्त इक्क मकान, एका घर वखाइंदा। आदि जुगादि खेल महान, जुग जुग वेस वटाइंदा। दाता दानी वड मेहरवान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप उठाइंदा। जन भगतां देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त एका घर बहाइंदा।

भगत भगवन्त साचा मेला, हरि हरि आप कराइंदा। वसणहारा धाम नवेला, लोकमात फेरा पाइंदा। जुगाँ जुगन्त सज्जण सुहेला, हरिजन साचे आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आप समझाइंदा।

भगत भगवन्त साचा राह, हरि सच सच जणाईआ। शब्दी शब्द शब्द सलाह, राम नाम पढ़ाईआ। दीवा बाती इक्क जगा, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अमृत बूंद स्वांती दए पिआ, अगनी तत्त बुझाईआ। बोध अगाधी नाद वजा, धुन आत्मक करे सुणाईआ। दूई द्वैती पड़दा लाह, सति सरूप प्रगटाईआ। जूठ झूठ दए मिटा, सच सुच्च बंधन पाईआ। ज़ात पात दए खपा, ऊँच नीच ना कोई रखाईआ। एका ब्रह्म दए दरसा, ईश जीव मेल मिलाईआ। जगत जगदीश होए सहा, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। भाण्डा भरम भउ देवे भन्ना, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। एका रंग दए चढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। एका अनन्द दए वखा, अनन्द अनन्द अनन्द घर घर विच्च समाईआ। एका चन्द दए चढ़ा, अन्ध अन्धेर रहण ना पाईआ। एका छन्द दए सुणा, सोहँ ढोला एका गाईआ। सतिजुग मार्ग दए वखा, पुरख अबिनाशी वेख वखाईआ। डुब्बदे पात्थर लए तरा, पाहन आपणा चरन छुहाईआ। राग नाद पन्ध दए मुका, इक्क इक्क अवाज़ लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला चाईं चाईंआ।

भगतन मिले आप भगवान, जुग जुग दया कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कर कर पहचान, साचा संग निभाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। काया मन्दर वेख मकान, साचे मन्दर सोभा पाइंदा। तख्त निवासी वड मेहरवान, शाहो भूप फेरा पाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, जीव जंत रंग रंगाइंदा। लक्ख चुरासी देवणहारा दान, जीवण जुगत आपणे हत्थ रखाइंदा। खेले खेल श्री भगवान, हरि का भेव कोई ना पाइंदा। भगतां मेला मेले आण, लोकमात वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि अन्त हरिजन साचे आपणे घर बहाइंदा।

भगत भगवान इक्को दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। भगत भगवान इक्को घर,

बंक दुआरा इक्क सुहाईआ। भगत भगवान एका अक्खर जाण पढ़, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। भगत भगवान एका मन्दर जाण वड़, सच महल्ला सोभा पाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा लड़ लैण फड़, फड़िआ लड़ ना कोई छुडाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दे पौड़े जाइण चढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ ।

भगत भगवान इक्को मंग, एका आस रखवाईआ। भगत भगवान सदा अखण्ड, खण्ड खण्ड ना कोई कराईआ। भगत भगवान प्रकाश विच्च ब्रह्मण्ड, वरभंड वज्जे वधाईआ। भगत भगवान उत्तम जेरज अंड, उत्भुज सेतज माण रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साची भगती आप समझाईआ।

साची भगती भगत भगवान, जुग जुग आप समझाइंदा। चरन सरन सरन चरन हरि ध्यान, दूजा इष्ट ना कोई वखाइंदा । अन्तर आत्म आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग त्रेता द्वापर भगत भगवन्त निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा खेल कराइंदा।

सतिजुग त्रेता द्वापर उतरया पार, थिर मात रहण ना पाईआ। भगत भगवन्त दए अधार, एका बूझ बुझाईआ। लेखा जाणे विच्च संसार, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। कलिजुग अन्तम आई वार, गुर गुर अवतार कहि कहि गए पुकार, पुरख अबिनाशी एका ओट रखवाईआ । प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान जोत सरूपी जामा धार, जोती जोत करे रुशनाईआ। वरन गोत ते वक्खे बाहर, रूप रंग रेख ना कोई विच्च संसार, अकल कल आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि निरगुण आपणा वेस वटाईआ ।

निरगुण वेस आपे धर, धर धरनी आप सुहाइंदा। भगत भगवन्त लए फड़, जुग जुग विछड़े मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे इक्को दात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक्क समझाइंदा।

साची वस्त भगतन दात, हरि भगवन आप जणाईआ। सोहँ अक्खर सतिजुग गाथ, सो पुरख निरँजण करे पढ़ाईआ। लहणा देणा चुक्के मस्तक माथ, पूरब लेखा रहण ना पाईआ । दो जहानां देवे साथ, एथे ओथे होए सहाईआ । मेल मिलावा त्रिलोकी नाथ, त्रै त्रै माया फंद कटाईआ। घर घर वेखे हरि रघुनाथ, रघुपत आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, हरिजन साचे आप उठाईआ ।

भगत भगवन्त इक्क भरवासा, एका ओट जणाइंदा। निरगुण सरगुण दासी दासा, बण

सेवक सेव कमाइंदा। काया मन्दर पावे रासा, गोपी काहन नाच नचाइंदा। हरि भगत हरि दर्शन पिआसा, दे दरस तृखा बुझाइंदा। आदि अन्त ना होए विनासा, अबिनाशी करता आपणे रंग रंगाइंदा। कलिजुग अन्तम वेखण आया आप तमाशा, निरगुण आपणा रूप धराइंदा। लक्ख चुरासी तोलणहारा तोला माशा, रत्ती रत्त रत्त ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेले आपणे घर, भगवन साचा मेल मिलाइंदा।

साचा मेला भगत भगवन्त, साचे घर वज्जे वधाईआ। लेखा जाणे जीव जंत, घट घट रिहा समाईआ। जिस जन बणाए साची बणत, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। गुरमुख वेखे विरला सन्त, हरि सतिगुर होए सहाईआ। नाता जोड़ नार कन्त, कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। रसना जिह्वा मणीआ मंत, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, भगत भगवन्त एका दर वज्जे वधाईआ।

एका दर वज्जे वाजा, हरि हरि आप वजाइंदा। मेल मिलावा ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। लक्ख चुरासी साजण साजा, घट घट वेख वखाइंदा। जन भगतां देवे नाम दाता, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। अंदर बहि बहि गाए गाथा, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सर्ब कल आपे समराथा, सो पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। लहणा देणा चुक्के तीर्थ ताटा, सर सरोवर इक्क नुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आप तराइंदा।

भगत भगवन्त इक्को माण, एका मिले वडयाईआ। भगत भगवन्त इक्क निशान, एका तीर चलाईआ। भगत भगवन्त इक्क ज्ञान, एका करे पढ़ाईआ। भगत भगवन्त इक्क मकान, एका घर डेरा लाईआ। भगत भगवन्त इक्क विधान, साचा मार्ग जगत वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे सदा सलाहीआ।

हरिजन वड्डिआई भगती भगत, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। लेखा जाणे बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी चम्म वेख वखाइंदा। देवे वड्डिआई विच्च जगत, जीवण जुगत आप समझाइंदा। आपणे मेलण दा आपे जाणे वक्त, वेद कतेब भेव ना आइंदा। कर किरपा जिस देवे दरस, जगत तृस्ना भुक्ख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां देवे इक्क ज्ञान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म एका रंग वखाइंदा। (२१ माघ २०१८ बिक्रमी देवी सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगतां करे सदा प्यार, हरि भगवन बेपरवाहीआ। भगतां देवे नाम अधार, हरि भगवन दया कमाईआ। भगतां देवे सच शिंगार, हरि भगवन शहनशाहीआ। भगतां देवे इक्क आधार, हरि भगवन चरन सरन सरनाईआ। भगतां देवे इक्क खुमार, हरि भगवन अमृत जाम पिआईआ। भगतां देवे इक्क जैकार, हरि भगवन साचा सोहला सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जन भगतां सेव कमाईआ।

भगवन मेला एकंकार, भगवन आपणा आप कराइंदा। भगतन सेज दए सवार, हरि भगवन वेख वखाइंदा। भगतन वखाए सच विहार, विवहारी खेल कराइंदा। जुगाँ जुगन्तर लए अवतार, निरधन सरधन मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणा संग निभाइंदा।

भगतन सोहे साचा बंक, बंक दुआरी आप सुहाईआ। नाता तोड़ जीव जंत, हरिजन आपणे संग मिलाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म बूझ बुझाईआ। आत्म अन्तर साचा मंत, सो पुरख निरँजण इक्क समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे भगत माण वडयाईआ।

भगत वड्डिआई विच्च जग, जीवण दाता आप रखाइंदा। दरस दिखाए उप्पर शाह रग, नेत्र नैण इक्क खुल्हाइंदा। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, रजो तमो सतो ना कोई तपाइंदा। सच नगारा जाए वज्ज, त्रैकाल दरसी आप वजाइंदा। पार किनारा करे हद्द, अद्धविचकार ना कोई डुबाइंदा। भगत भगवन्त साची यद, साचा बंस बणाइंदा। आदि अन्त दर दुआरे सद्द, साचा मेल मिलाइंदा। भगत प्यार जए वज्झ, एका बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत सुहेला इक्क अकेला, जुग जुग खेल कराइंदा।

जुग जुग खेल पारब्रह्म, आपणा आप कराईआ। ना मरे ना पए जम्म, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। दो जहानां जाणे कम्म, लक्ख चुरासी भेव चुकाईआ। लेखा जाणे दमां दम, पवण सवास रिहा समाईआ। भगतां बेड़ा आप बन्न्ह, हरिजू आपणे कंध उठाईआ। राए धर्म ना देवे डंन, वेले अन्त ना कोई सजाईआ। एका राग सुणाए कन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे थाउँ थाईंआ।

भगतन वेखे थान थनंतर, दो जहानां फोल फुलाइंदा। भेव चुकाए गगन गगनंतर, गगन मण्डल सोभा पाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट आपणा आसण लाइंदा। जुग जुग जणाए आपणा मंतर, गुर पीर अवतार आप पढ़ाइंदा। आदि जुगादि सदा सुतंतर, सति सतिवादी खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा।

हरिजन सच्चा इक्को मीत, दूसर संग ना कोई रखाईआ। जगत जुग अवल्लड़ी

रीत, जुग करता आप चलाईआ। लक्ख चुरासी परखणहारा नीत, दिवस रैण रैण दिवस आपणी सेव कमाईआ। भगतन मेला घर अनडीठ, अनडिठड़ा धाम वखाईआ। अठ्ठे पहर वसे चीत, चित वित ठगोरी कोई ना पाईआ। चरन सरन सच प्रीत, प्रीतीवान इक्क सिखाईआ । आदि अन्त रहे अतीत, त्रैगुण विच्च कदे ना आईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, घट घट रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे घर, गृह मन्दर सोभा पाईआ।

भगतन मेला भगतन अंदर, काया बंक सुहाइंदा। लेखा जाणे डूंघी कंदर, काया भवरी फोल फुलाइंदा। वासना मेटे मनुआ बन्दर, आसा तिंसना नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी दया कमाइंदा।

हरिजन नाता तुटे मोह, ममता लोकमात रहण ना पाईआ। जगत विकारा देवे कोह, नाम छुरी इक्क चलाईआ। भेव खुल्हाए सोहँ सो, आत्म परमात्म पड़दा लाहीआ। अमृत आत्म देवे चोअ, निझर झिरना आप झिराईआ। जोत निरँजण करे लोअ, अन्ध अन्धेर मिटाईआ । हरि का नाम ढोआ ढोअ, हरि जू झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दर भाग लगाईआ।

गृह मन्दर लग्गे भाग, काया बंक सुहाइंदा। बन्द किवाड़ी खुल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। निर्मल जोत जगे चिराग, दीवा बाती ना कोई रखाइंदा। शब्द अनादी वज्जे नाद, अनहद राग अलाइंदा। आत्म उपजे इक्क वैराग, वैरागी रूप आप अखवाइंदा । जगत तृस्ना दए त्याग, त्यागी आपणा रंग रंगाइंदा। सुरत सवाणी जाए जाग, शब्द हाणी मेल मिलाइंदा। आपणे हत्थ पकड़े वाग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे बंक सुहाइंदा।

बंक सोहे बंक दुआर, टेडी बंक पार कराईआ। गृह मन्दर अंदर होए उजिआर, नूर नूराना नूर रुशनाईआ। नाद धुन धुन जैकार, शब्दी शब्द शब्द शनवाईआ । साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाहीआ। वाह वा सतिगुर वज्जे सितार, बिन तन्दी तार हिलाईआ । एका नाद एकओअंकार, ओअंकारा रूप वटाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलक्ख अगोचर बेपरवाहीआ । भगतां पैज आप सवार, भगत वछल नाउँ धराईआ। जुग जुग लोकमात लए अवतार, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। कलिजुग अन्तम खेल अपार, निराकार आप कराईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले वेखे विगसे वेखणहार, अक्ख प्रतक्ख आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता इक्क अतीता ठांडा सीता पतित पुनीता साची रीता आप चलाईआ ।

साची रीता दो जहान, दो जहानां वाली आप चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दए ज्ञान, एका गुण समझाइंदा। लक्ख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे मार ध्यान, आत्म अन्तर

बूझ बुझाइंदा। नौं खण्ड सत दीप ब्रह्मण्ड खण्ड वरवाए निशान, सच निशाना इक्क झुलाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान लेखा जाणे अञ्जील कुरान, खाणी बाणी भेव चुकाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार लेखा जाण श्री भगवान, पूरब लहणा झोली पाइंदा। भगतां देवे आत्म दान, साचे सन्तां मिले आण, गुरमुख वेखे बाल अञाण, गुरसिखां बख्शे चरन ध्यान, सरन चरन सची सरनाईआ। दाता दानी नौजवान, देवणहारा जीव जहान, आदि अन्त श्री भगवन्त जुग जुग साची भिच्छया एका एक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे घर, गृह मन्दर आप सुहाईआ।

गृह मन्दर वेखे काया तन, त्रैगुण माया बंधन रखवाईआ। बुद्धि मत वेखे मन, मन मनसा खेल कराईआ। जोत निरँजण चढ़े चन्न, चन्द चन्द शरमाईआ। पंचम पंच बेड़ा बन्न, खेवट खेटा सिख जणाईआ। वस्त अमोलक नाम धन, सच ख़ज़ीना विच्च रखवाईआ। दिस ना आए नेत्र अन्न्ह, भरमे भुल्ली सर्ब लुकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार देवे डंन, डौरू डंका इक्क वजाईआ। जन भगतां किरपा कर श्री भगवन, आपणी बूझ बुझाईआ। एका राग सुणाए कन्न, छत्ती राग भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेले आपणे दर, दर मन्दर इक्क सुहाईआ।

दर मन्दर सदा सुहौणा, हरि साचा आप सुहाईआ। भगत भगवन्त गीत इक्को गावणा, एका करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण पकड़े दामना, दामनगीर सच्चा शहनशाहीआ। एथे ओथे होए जामना, साची जामनी आप निभाईआ। अन्तम अन्त पूरी करे भावना, भावी काल नेड़ ना आईआ। सोहँ सो साचा ढोला गावणा, आत्म परमात्म होए सहाईआ। परम पुरख एका पावणा, अमरापद इक्क वखाईआ। जोती जोत जोत मिलावणा, भगत भगवन्त एका रंग वखाईआ। कलिजुग अन्तम बेड़ा पार करावणा, जिस जन साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान फड़ाए दामना, फड़िआ पल्लू छुट्ट ना जाईआ।

भगत कहे प्रभ सर्बग्ग, हरि एका एक बूझ बुझा। कलिजुग अन्तम लग्गी अग्ग, चार वरन रिहा कुरला। कोई सहाई दिसे ना जग, वेख्या थाउँ थां। मेरी रक्खे ना कोई लज, अन्तम पकड़े ना कोई बांह। पड़दा सके ना कोई कज्ज, सारे बैठे करके नांह। कूड़ नगारा रिहा वज्ज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्शणी सच सरना।

भगत कहे दस्स भगवान, कलिजुग कूके दए दुहाईआ। चारों कुण्ट होई वैरान, रुत्त बसन्त ना कोई वखाईआ। रसना जिह्वा सारे गाण, आत्म परमात्म ना कोई मिलाईआ। जीव जंत होए हैरान, साध सन्त देण गवाहीआ। कलिजुग जोधा वड बलवान, सभ दे माण रिहा गवाईआ। घर घर पंच विकार होया प्रधान, सच प्रधानगी इक्क समझाईआ। अंदर बहि बहि खेल करे शैतान, शरीअत नाल लड़ाईआ। तेरी कोई ना मन्ने आण, गुर अवतार गए समझाईआ। पीर पैगम्बर होए बेपहचान, नूर ज़हूर ना कोई दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, किस बिध मिले तेरी सरनाईआ।

भगत कहे सुण भगवन्त, मेरी इक्क अरदास। लक्ख चुरासी जीव जंत, कलिजुग अन्त होई निरास। कोई ना दिसे साचा सन्त, सच वस्त किसे ना पास। कलिजुग माया पाई बेअन्त, ना कोई करे बन्द खुलास। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका बख्श सच धरवास।

सच धरवास दे निरँकार, हरि भगत मंग मंगाईआ। तेरा खेल पृथ्मी अकाश, गगन मण्डल तेरी रुशनाईआ। रव सस तेरा प्रकाश, नूर नूर नूर समाईआ। गुर अवतार तेरे दास, पीर पैगम्बर सेव कमाईआ। तूं शहनशाह शाह पातशाह शाहो शबास, सचखण्ड साचे तख़त आसण लाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लक्ख चुरासी तेरी रास, जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म गोपी काहन नाच नचाईआ। घट घट अंदर तेरा वास, रूप रंग रेख नज़र कोई ना आईआ। कर किरपा रक्ख आपणे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाईआ।

साचे भगत सुण ला मीत, हरि साचा सच जणाइंदा। कलिजुग अन्त खेल अनडीठ, अनभव आपणी धार चलाइंदा। निरगुण चलाए आपणी रीत, सरगुण रूप ना कोई वखाइंदा । लक्ख चुरासी परखे नीत, जीव जंत वेख वखाइंदा। लेखा जाणे मन्दर मसीत, शिवदुआले मट्ठ फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा।

साचे भगत रक्ख उडीक, हरि इक्को इक्क जणाईआ। वेद व्यासा लिख के गिआ तारीक, एका गुण समझाईआ। ईसा कह के गिआ लाशरीक, मेरा खुदावंद आए चाईं चाईंआ। मुहम्मद रक्खी इक्क प्रीत, सिर अमामा फेरा पाईआ। निरगुण नानक कहे हरि नज़ीक, नेरन नेरा खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा गुण रिहा समझाईआ ।

साचा गुण सुण लै बाल, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा । कलिजुग अन्तम खेल कमाल, कमला रमला आप कराइंदा। गोबिन्द सूरा वेखे लाल, लाल अनमुलड़ा गोद बहाइंदा। निरगुण सरगुण बण दलाल, लोकमात वेस वटाइंदा। सम्बल वेखे धाम निराल, निहचल महल्ल बणाइंदा । महांबली उतरे आण, नानक लेखा पूर कराइंदा। जोधा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। सति उठाए इक्क निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा । जन भगतां वेखे आपे आण, जन्म जन्म दा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा।

आपणा भेव देवे दस्स, हरि वड्डा वड वडयाईआ। प्रगट होवे पुरख समरथ, निहकलंका नाउँ रखवाईआ। हरिजन साचे लए रक्ख, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान कर किरपा करे वक्ख, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। एथे गावे आपणा जस,

ओथे देवे माण वडयाईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव आप चुकाईआ।

आपणा भेव देवे चुक्क, श्री भगवान चुकाइंदा। दरस वखाए जो बैठा लुक, रूप अनूप धराइंदा। निरगुण शेर पए बुक्क, सिँघ आपणा रूप वखाइंदा। जन भगतां उप्पर जाए तुठ, मेहर नज़र इक्क टिकाइंदा। अमृत जाम पिआए घुट, आप आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे मिलण दी बिधी आपणे हत्थ रखवाइंदा।

आदि जुगादि मेला हत्थ, हरि सतिगुर आप रखवाइंदा। जुग जुग खेल पुरख समरथ, भेव कोई ना पाइंदा। लक्ख चुरासी पा नत्थ, ब्रह्मण्ड खण्ड नाच नचाइंदा। लेखा जाणे अठ्ठ सठ, तीर्थ तट्ट फोल फुलाइंदा। वसणहारा घट घट, गृह गृह सेज सुहाइंदा। जोती नूर लट लट, नूर नूराना डगमगाइंदा। दुरमत मैल कट कट, सुच्च संजम इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाइंदा।

हरिजन मेला अन्त कल, कल काती रहण ना पाईआ। पुरख अबिनाशी वड प्रबल, बल आपणा आप वखाईआ। लक्ख चुरासी अछल अछल्ल, हरिजन साचे लए उठाईआ। आत्म सिँघासण एका मल, साची सेजा सोभा पाईआ। शब्द संदेसा एका घल्ल, घर घर विच्च लए जगाईआ। जोती शब्दी आपे रल, निरगुण निरगुण समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला एका घर, घर मन्दर इक्क वखाईआ।

इक्को घर सोभावन्त, आदि जुगादि सुहाया। खेले खेल जुगाँ जुगन्त, जुग जुग वेस वटाया। हरिजन मेला हरि हरि कन्त, घर साचे सोभा पाया। कलिजुग अन्त बणाई बणत, बसन बनवारी आपणी दया कमाया। एका नाम मणीआ मंत, मन का मणका दए भवाया। करे खेल वासी पुरी घनक, घनईआ आपणा रूप धराया। गुरमुख सुरती वरे जिउँ सीता सपुत्तरी जनक, जानकी आपणे अंग लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे दर, दर मन्दर आप बणाया।

दर मन्दर वेखे काया गढ़, पंज तत्त वडयाईआ। पुरख अबिनाशी अंदर वड़, आपणा पन्ध मुकाईआ। साचे पौड़े जाए चढ़, औदां जांदा दिस ना आईआ। निशअक्खर आखर आपे पढ़, करे सच पढ़ाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। सन्त सुहेले आपे फड़, फड़ फड़ बंधन पाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, भगत भगवन्त सदा सदा आपणी गोद रखवाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, भयानक रूप ना कोई जणाईआ। चरन सरोवर नुहाए साचे सर, सर आत्म इक्क वखाईआ। जन भगतां उप्पर किरपा कर, किरपा निध गहर गुण सागर, संसार सागर पार कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन कर्म करे उजागर, तिस कर्म कांड कोई रहण ना पाईआ।

(२१ माघ २०१८ बिक्रमी राजिंदर सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत भगवान मेला जग, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। सन्त सुहेले साचे लभ्भ, हरि पुरख निरँजण खेल वखाइंदा। गुरमुख साजण पिआए अमृत जाम मदि, रस रसीआ इक्क वखाइंदा। गुरसिख प्यारे कर कर अड्ड, नाम डोरी बंधन पाइंदा। सति सरूप निशाना गड्ड, सति सतिवादी आप वखाइंदा। जन्म कर्म दी तोड़ हट्ट, आपणे घर बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीनन आपणी दया कमाइंदा।

भगत भगवन्त सच संदेसा, एका एक जणाईआ। सन्त साजन आपे वेखा, लोचण नैण नैण खुल्हाईआ। गुरमुखां मेटे पिछली रेखा, अगला पन्ध वखाईआ। गुरसिखां मेले साचे देसा, घर मन्दर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ ।

भगत भगवन्त होए अधीन, एका दूआ भेव चुकाया। सन्तां लेखा चुक्किआ लोक तीन, लोक परलोक वेख वखाया। गुरमुखां हिरदा ठांडा सीन, सांतक सति सति कराया। गुरसिख रसना जिह्वा रहे चीन, निमख निमख गुण गाया। दाता दानी वड परबीन, मेहरवान दया कमाया। लेखा जाणे जिउँ जल मीन, जल मीन आपणी धार चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाया।

भगत भगवन्त इक्को घाट, हरि साचा सच रखाइंदा। सन्तन मेटे दूर दुराडी वाट, आपणा पन्ध मुकाइंदा। गुरमुखां देवे इक्को दात, साची वस्त झोली पाइंदा। गुरसिखां जोड़े साचा नात, नाता बिधाता इक्क बंधाइंदा। कलिजुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द वखाइंदा । शब्द अगम्मी हरि हरि गाथ, चार वरन पढ़ाइंदा। अठारां बरन देवे साथ, नव नौं फेरा पाइंदा। चार चार मेला कमलापात, दहि दिशा वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। वसणहारा इक्क इकांत, अकल कला रूप वटाइंदा। गुरमुख सज्जण वेखे मार झात, आपणा नैण खुल्हाइंदा। गुरसिखां खोल्हणहारा ताक, बन्द ताकी आप तुड़ाइंदा। सन्ता लहणा देणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाइंदा। भगत भगवन्त वसे साथ, सगला संग रखाइंदा। सगल विसूरे जाइण लाथ, जिस जन आपणा दरस कराइंदा । नाता तुट्टे पूजा पाठ, अठ्ठ सठ तीर्थ ना कोई नुहाइंदा। इक्को रक्खे साची याद, आपणी बूझ बुझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर सुणदा आया फ़रयाद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला आप मिलाइंदा।

भगत भगवन्त दस्से राह, एका गुण जणाईआ। सन्तन मेला सैहज सुभा, सतिगुर आप कराईआ। गुरमुख नेत्र पेख चढ़े चाअ, नित नित वेख वखाईआ। गुरसिख गुर गुर

सीस रिहा झुका, निउँ निउँ मस्तक टिक्का लाहे छाहीआ। सतिगुर पूरा बेपरवाह, दीनन आपणी दया कमाईआ। कलिजुग अन्तम वेखे आ, वेखणहारा दिस ना आईआ। जन भगतां बख्शे सर्ब गुनाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समरथ पुरख वड वडयाईआ।

समरथ पुरख इक्क इकल्ला, आदि जुगादि समाइंदा। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, सोभनीक सोभा पाइंदा। जोती धार आपे रला, शब्दी नाद वजाइंदा। थिर घर फड़ाए आपणा पल्ला, शब्दी बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि अन्त श्री भगवन्त, आपणा भेव आपणे हत्थ रखवाइंदा।

आदि पुरख हो उजिआरा, एका घर दए वडयाईआ। सचखण्ड सुहाए सच मुनारा, छप्पर छन्न ना कोई सुहाईआ। जोती जोत जोत उजिआरा, सूरज चन्न ना कोई चढ़ाईआ। धरत धवल ना कोई अखाड़ा, मण्डल मंडप ना कोई वडयाईआ। इक्क इकल्ला एकओअंकारा, एका आपणा बंक सुहाईआ। शाहो भूप बण सिकदारा, सीस जगदीस आपणे ताज टिकाईआ। हुक्मी हुक्म हुक्म वरतारा, धुर फ़रमाणा आप सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे सहारा, त्रैगुण मेला सैहज सुभाईआ। पंज तत्त कर अकारा, निरगुण सरगुण बंधन पाईआ। शब्दी नाद सची धुंनकारा, घट मन्दर आप वजाईआ। लेखा जाणे गुर अवतारा, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। खाणी बाणी पावे सारा, अंडज जेरज उत्भुज सेतज शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश आपणा हुक्म मनाईआ। राउ रंकां राज राजाना शाह सुल्ताना दए सहारा, ऊँच नीच जात पात कायनात आपणी खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग गेड़ा आपणे हत्थ रखवाईआ।

जुग जुग गेड़ा हरि हरि गेड़, कोहलू चक्की चक्क भवाइंदा। अन्तम करे हक़ निबेड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्त रहण ना पाइंदा। निरगुण सरगुण छेड़ा छेड़, जगत खेल आप खिलाइंदा। वरन बरन देवे भेड़, जात पात वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, तेरा धन्दा तेरी झोली पाइंदा।

कलिजुग उठ उठ मलंग, हरि साचा सच जणाईआ। अन्तम वेला वजा मरदंग, झूठ मरदंगा हत्थ फड़ाईआ। सृष्ट सबाई होई नंग, साचा पड़दा उत्ते ना कोई पाईआ। आत्म परमात्म अंदर झूठी कंध, ढह ढेरी ख़ाक ना कोई कराईआ। तेरा नशा झूठा गंद, रसना जिह्वा करे हलकाईआ। किसे ना आवे परमानंद, निज़ानंद ना कोई रसाईआ। गा गा थक्के बत्ती दन्द, हरि का दरस कोई ना पाईआ। हरि जू सुत्ता दे कर कंड, आपणी करवट ना लए बदलाईआ। चारों कुण्ट भेख परवण्ड, आपणा बल रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अनभव आपणी धार चलाईआ।

अनभव धार श्री भगवान, हरि साचा सच चलाइंदा। जोधा सूर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। सति सतिवादी सति निशान, सति पुरख निरँजण आप हिलाइंदा।

सन्त सुहेले वेखे आण, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। गुरमुखां चुक्के झूठी काण, दूसर आण ना कोई पवाइंदा। गुरसिखां देवे इक्क ज्ञान, गोझ ज्ञान समझाइंदा। सोहँ अक्खर साचा नाम, सतिगुर पूरा झोली पाइंदा। एथे ओथे देवे माण, सगला संग रखाइंदा। किरपा कर श्री भगवान, विष्नूं आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे नाम निधान, तिस आपणा बंधन पाइंदा। (२१ माघ २०१८ बिक्रमी सरदार सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

श्री भगवान कहे मैं भगतां दास, लोकमात ना कोई वडयाईआ। जुग जुग जन भगत मिलण दी रक्खां आस, सचखण्ड बैठा ध्यान लगाईआ। मिल मिल भगत बुझे पिआस, तृस्ना तृख रहण ना पाईआ। बिन भगत मेरी पूरी करे ना कोई आस, आसा पूर ना कोई अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाईआ। साचा भगत साख्यात, मेरा रूप दरसाइंदा। निरगुण सरगुण साचा नात, लोकमात बंधन वखाइंदा। नाद अनाद सुणाए गाथ, शब्दी शब्द पढ़ाइंदा। अंदर बाहर वसे साथ, विछड़ कदे ना जाइंदा। अन्त वखाए एका घाट, सति किनारा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भेव चुकाइंदा।

जन भगत मेरा सच्चा मीत, लोकमात अखवाइंदा। आदि जुगादी साची रीत, जुग जुग धार जणाइंदा। मेरा उहदा इक्को गीत, एका राग अलाइंदा। सदा सुहेला ठंडा सीत, सांतक सति सति समझाइंदा। सति सतिवादी सच प्रीत, सति पुरख निरँजण आप रखाइंदा। मेल मिलावा धाम अनडीठ, अनडिठड़ी सेज हंढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत सदा सलाहिंदा।

बिन हरि भगत ना मेरी याद, जगत जुगत ना कोई वडयाईआ। हरि भगत साची दाद, प्रेम वस्त झोली पाईआ। सज्जण सुहेला आपे लाध, मिल मिल खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत दए वडयाईआ।

साचे भगत तेरा सति सरूप, हरि साचा सच जणाइंदा। तेरे अंदर इक्क सबूत, आपणा आप वखाइंदा। तेरी काया पंज तत्त कलबूत, अंदर आपणा आसण लाइंदा। नाता तोड़ जूठ झूठ, साचा मंतर नाम दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आप वडिआइंदा।

भगत भगवन्त वड्डा वड, हरि देवे माण वडयाईआ। आपणी धार आपणे विच्चों कढ्ढ, आपे लए प्रगटाईआ। आपे नाता जोड़े हड्ड मास नाड़ी रत्त, बूंद रकत बंधन पाईआ। आपे

देवे साची वथ्थ, आत्म परमात्म वड वडयाईआ। आपणी महिमा जाणे अकथ्थ, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। आप चलाए साचा रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सालाहीआ।

बिन भगत ना कोई रंग, रूप रेख मात ना कोई समझाईआ। बिन भगत ना सेज पलँघ, सच सिँघासण ना कोई बहाईआ। बिन भगत ना कोई अनन्द, अनन्द अनन्द ना कोई रखाईआ। बिन भगत ना कोई छन्द, रसना जेहवा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नूर आपणा ज़हूर हरि भगत आप दिखाईआ।

हरि भगत साचा नूर, नूर नूराना आप जणाइंदा। पुरख अबिनाशी हाज़र हज़ूर, आप आपणा खेल कराइंदा। वसणहारा दूरन दूर, नेरन नेर पन्ध मुकाइंदा। आसा मनसा मनसा आसा पूर, तृस्ना भुक्ख गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा।

हरिजन मिले इक्क दुआर, कलिजुग अन्त मिली वडयाईआ। लहणा देणा जुग चार, जुग चौकड़ी बंधन पाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, नौं खण्ड पृथ्मी फोल फुलाईआ। लक्ख चुरासी नैण उघाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वडयाईआ ।

बिन भगत ना कोई संग, सगला संग ना कोई निभाइंदा । नाम वजाए ना कोई मरदंग, सच मरदानगी ना कोई जणाइंदा। नाम चिल्ला तीर कमान खिचे ना कोई कमंद, बाहू बल ना कोई रखाइंदा। भगत सुहागी गाए ना कोई छन्द, सहिंसा रोग ना कोई चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां आप वडिआइंदा।

भगत वड्डिआई जुग जुग चार, जुग जुग आप कराइंदा। कलिजुग अन्तम कर प्यार, एका बूझ बुझाइंदा। एका नाम शब्द धुंनकार, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। बण विचोला आप ओअंकार, साची सेव कमाइंदा। हौला हौला कर कर भार, साची वंड वंडाइंदा। पूरब जन्म पावे सार, लिख्त लेखा फोल फुलाइंदा। कर्मी कर्म लए विचार, नेहकरमी वेस वटाइंदा। जन्म जन्म दए सवार, अजन्मा रोग गवाइंदा। वरन बरन करे खुआर, साची सरन इक्क समझाइंदा। हरन फरन खोल्ह किवाड़, रूप अनूप दरसाइंदा। वाह ना लग्गे तत्ती हाढ़े, अगनी तत्त ना कोई जलाइंदा। देवे दरस अगम्म अपार, रूप अनूप वटाइंदा। करे खेल विच्च संसार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, आप आपणी बूझ बुझाइंदा । नाता तोड़ जगत जंजाल, जागरत जोत इक्क जगाइंदा। चरन प्रीती निभे नाल, पुरख अबिनाशी बंधन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगतां आप तराइंदा ।

तारनहारा इक्को गुर, आदि अन्त अखवाइंदा। लेखा जाणे धुरदरगाही धुर, धुर लेखा आपणे हत्थ रखवाइंदा। भगत भगवान सुणाए इक्को सुर, राग अनादी नाद अलाइंदा। एका मन्दर बहण जुड़, जोती जोड़ा आप मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन रंग आप रंगाइंदा।

भगवन रंग रंग अपारा, जन भगतां आप चढ़ाईआ। कलिजुग अन्तम दे सहारा, सरनगत इक्क समझाईआ। वेखे विगसे वेखणहारा, नेत्र लोचण नैण आप खुल्हाईआ। दरसी दरस अपर अपारा, दरसन आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सैहज सुबाईआ।

भगतन मेला आत्म घाट, घर घर विच्च मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ सज्जण साक, साचा बंधन पाइंदा। लेखा जाणे भविख्त वाक, अनभव आपणा खेल खिलाइंदा। खोल्हणहारा बन्द ताक, दर दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे धाम बहाइंदा।

हरिजन वेखे साचा धाम, एका एक वडयाईआ। निरगुण उथे वसे राम, रूप रंग रेख नज़र कोई ना आईआ। शाहो भूप सच अमाम, बेऐब डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

बेऐब डेरा आपणा ला, आपणा खेल कराइंदा। साचा सजदा सीस झुका, निउँ निउँ वेख वखाइंदा। साचा काअबा दए वड्डिआ, दोए दोए आबा खेल कराइंदा। तन रबाबा दए वजा, महिबाब आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत आप वडिआइंदा।

हरि भगत तेरा माण, दो जहान रखवाईआ। कलिजुग अन्त कर पछाण, आपणा मेल मिलाईआ । नाता तोड़ जीव जहान, जीवण जुगत समझाईआ। आत्म अन्तर देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। ईश जीव कर परवान, जगदीशर सोभा पाईआ। काया मन्दर वेख मकान, बैठा आसण लाईआ। सच संदेसा धुर फ़रमाण, सोहँ ढोला रिहा गाईआ। नर नरेशा नौजवान, आपणा बल प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मन्नण आण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। लेखा जाणे दो जहान, भेव कोई ना पाईआ। करोड़ तेतीसा सारे गाण, लक्ख लक्ख शुकर मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, बल आपणा आप धराईआ।

भगतन मेला सच दरबार, धुर दरबारी आप कराइंदा। खेले खेल अपर अपार, रूप रंग रेख ना कोई जणाइंदा। शब्दी शब्द कर प्यार, दर घर साचे सोभा पाइंदा। वणजी वणज वणज वापार, साचा हट्ट चलाइंदा। तीर्थ तट्ट पार किनार, अठसठ भेव मुकाइंदा । भगत

भगवन्त कर त्यार, साचा मार्ग लाइंदा। सोहँ शब्द इक्क जैकार, जै जैकार सुणाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला आप मिलाइंदा।

भगतन मेला एकंकार, आदि जुगादि कराइंदा। जुग जुग वेखे वेखणहार, आपणा रूप धराइंदा। जुग जन्म दे विछड़े मेले यार, आपणा बंधन पाइंदा। नाता तोड़ पुरख नार, एका रंग वखाइंदा। बिरध बाल जवान देवे तार, जिस जन आपणा दरस कराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान वस्सया बाहर, अञ्जील कुरान भेव ना आइंदा। रागी नादी गए हार, गा गा पन्ध ना कोई मुकाइंदा। महल्ल अटल उच्च मनार, सोभावन्त डेरा लाइंदा। निर्मल नूर जोत उजिआर, नाउँ निरँकारा आप अखवाइंदा। सचखण्ड वसे सच मिनार, सति सतिवादी डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला साचे घर, घर सुहञ्जणा आप सुहाइंदा।

साचा घर हरि सुहञ्जणा, एका एक वडयाईआ। दीपक जोत जगे निरँजणा, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। जन भगतां मेल साचे सज्जणा, हरि सज्जण आप कराईआ। दीना नाथ दर्द दुःख भय भंजना, भव सागर पार कराईआ। गुरमुख विरले देवे नेत्र अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरन धूड़ साचा मज़ना, दुरमत मैल धवाईआ। काल नगारा सिर ते वज्जणा, कूके सर्ब लोकाईआ। गुरमुख गुर दर बहि बहि सजणा, मिले माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, भगतन वेखे चाईं चाईंआ।

भगतन मेला चाउ घनेरा, एका एक जणाइंदा। नाता तुट्टे संझ सवेरा, एका रंग वखाइंदा । लेखा चुक्के मेरा तेरा, तेरा मेरा एका रूप प्रगटाइंदा। प्रगट होए सिँघ शेर दलेरा, भबक आपणी आप लगाइंदा। धरत मात दा खुल्ला वेहड़ा, कर कर खुशी मनाइंदा। जीव जंत देवे गेड़ा, गेड़े विच्च भवाइंदा। जन भगतां बन्ने आपे बेड़ा, साची सेव कमाइंदा। हरिजन वसे तेरा खेड़ा, दर घर साचा आप वडिआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन आपणे रंग रंगाइंदा।

भगतन रंग चढ़े अमोला, अमुल आप चढ़ाईआ। निरगुण सरगुण होए तोला, एका कंडा हत्थ उठाईआ। सोहँ सो साचा बोला, धारन नाल जणाईआ। लक्ख चुरासी चार कुण्ट चार वरन पिआ रौला, हरि का भेव कोई ना पाईआ। कोई कहे मेरा मौला, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ । कोई कहे मेरे नाल करके गिआ कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। पुरख अबिनाशी कहे मैं सभ तों रक्खया उहला, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। पंज तत्त काया वसदा रिहा चोला, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणे हुक्म फिराईआ। कलिजुग अन्तम बण विचोला, जन भगतां मेल मिलाईआ। भगत दुआरा एका खोल्ला, मिले माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे भगत आप प्रगटाईआ।

साचे भगत मात प्रगटा, प्रगट आपणा खेल जणाईआ। साचा हट्ट आप खुल्हा, वस्त अनडिठ आप वरताईआ। साचा तट्ट आप जणा, तट्ट किनारे डेरा लाईआ। सच राग आप अला, सोहँ ढोला रिहा गाईआ। साचा नाद आप वजा, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सैहज सुभाईआ।

सैहज सुभाउ मेला भगत, हरि भगवन आप कराइंदा। वेख लोकाई देवे माण जगत, जुगत आपणी आप जणाइंदा। सेवक सेवा आदि शक्त, शक्ती आपणी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार लंघाइंदा।

हरिजन लंघे पार हद्द, हरि सतिगुर आप लंघाईआ। कलिजुग कूड़ा छड्डे हठ, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। बण निमाणा जाए ढठ्ठ, ढहि ढहि नीर वहाईआ। आपणे घरों ना देणा कढ्ढ, तुध बिन होर ना कोई सरनाईआ। मेरे बुढ्ढे होए हड्ड, दुॅख अवर ना झल्लया जाईआ। कर किरपा मेरा निशाना गड्ड, दोए जोड़ मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर घर साचे सची सरनाईआ।

सच सरनाई देणी चरन, कँवल ध्यान लगाईआ। नाता तुटिआ जन्म मरन, मरन जन्म ना वंड वंडाईआ। प्रभू मिल्या घाड़त घड़न, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, भगतन एका रंग रंगाईआ।

भगतन रंगे रंग मजीठ, साची भगती इक्क जणाइंदा। सतिजुग चले साची रीत, सति सतिवादी आप लगाइंदा। चार वरन दा इक्को गीत, सोहँ ढोला इक्को गाइंदा। पुरख अबिनाशी बणे मीत, बण बण मित्र सेव कमाइंदा। हरिजन काया करे ठंडी सीत, आप आपणा दरस दिखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सचे वेख वखाइंदा।

हरिजन हरिजू आपे वेख, आपणी खुशी मनाईआ। कर किरपा धारे साचा भेस, वेस अव्वलड़ा आप वटाईआ। ना कोई जाणे नर नरेश, शाह पातशाह भेव ना राईआ। लिखणहारा साचे लेख, लिख लिख लेखा आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सैहज सुभाईआ।

भगतन मेला लोकमात, हरि साचा सच लगाइंदा। आपे वेखे मार झात, नेत्र नैण आप उठाइंदा। आपे होए सज्जण साक, साचा बंधन आपे पाइंदा। आपे जाणे साचा घाट, पार किनारा आपणे हत्थ रखाइंदा। आपे लेखा जाणे सीआं साढे तिन्न हत्थ माट, काया माटी फोल फुलाइंदा। आप उतारे साचे घाट, साचा पत्तण इक्क वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे एका दान, सतिगुर भिच्छया आपणी इच्छया झोली पाइंदा।

(२१ माघ २०१८ बिक्रमी अंगरेज़ सिंघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

श्री भगवान भगतन संग, आदि जुगादि समाइंदा। निरगुण निरँकार निरवैर चढ़ाए साचा रंग, रंग मजीठ आप रंगाइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म सुणाए छन्द, नाम निधाना आप अलाइंदा। ईश जीव मेटे चिन्द, चिन्ता रोग ना कोई वखाइंदा। सुत अनादी बणाए बिन्द, बण खण्ड आपणा फेरा पाइंदा। देवे वस्त गुणी गहिंद, गहर गम्भीर आप वरताइंदा। अमृत आत्म सागर सिन्ध, निझर झिरना इक्क झिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त खेल कराइंदा।

भगत भगवन्त साचा मीत, जुग जुग दया कमाईआ। लोकमात चलाए अवल्लड़ी रीत, निरगुण सरगुण बंधन पाईआ। नाता तोड़े हस्त कीट, ऊँच नीच एका रंग वखाईआ। करे कराए पतित पुनीत, वरन बरन दए गवाईआ। जाम पिआए अमृत ठांडा सीत, त्रैगुण अगनी तत्त बुझाईआ। अन्तर आत्म परखे नीत, मन मत बुध्ध ना कोई वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वडयाईआ। भगत भगवान इक्को रंग, आदि जुगादि खेल कराइंदा।

इक्को सेज इक्क पलघँ, सच सिँघासण इक्क वडिआइंदा। एका मन्दर इक्क अनन्द, एका घर बहि बहि मंगल गाइंदा। एका नूर जोती चढ़े साचा चन्द, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। इक्क सुणाए सुहागी छन्द, अनहद नादी नाद वजाइंदा। एका जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, पूरब लेखा लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग भगतां आप तराइंदा।

भगत भगवन्त इक्क निशान, सचखण्ड निवासी आप प्रगटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर दे दे दान, कलिजुग साची बणत बणाईआ। लेखा जाणे दो जहान, त्रैभवन धनी आपणी खेल रचाईआ। चौदां लोक खोल्ह हट्ट दुकान, सत्त सत्त वंड वंडाईआ। एका वस्त नाम प्रधान, घर अमोलक आप टिकाईआ। गुरमुख विरला करे परवान, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। लक्ख चुरासी होए हैरान, हरि का भेव कोई ना पाईआ। घर घर वड़िआ पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। आसा तृष्ना लग्गी खाण, हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। बिन भगत नज़र ना आए किसे भगवान, लोचण नैण दरस कोई ना पाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी अन्त वैरान, पत डाल्ही कोई नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त वेखे चाईं चाईंआ।

भगत भगवन्त इक्क दुआरा, गृह मन्दर सोभा पाइंदा। भगत भगवन्त इक्क सहारा, एका दूआ मोह वधाइंदा। भगत भगवन्त इक्क वणजारा, घर घर विच्च हट्ट खुल्हाइंदा। भगत भगवन्त इक्क नग़ारा, काया नौबत आप वजाइंदा। भगत भगवन्त इक्क जैकारा, आत्म परमात्म सोहँ ढोला गाइंदा। भगत भगवन्त इक्क अखाड़ा, सखी काहन रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप सलाहिंदा।

भगत भगवन्त इक्क सलाह, हरि जू आपणी आप जणाईआ। निरगुण सरगुण लए परना, नारी कन्त रूप वटाईआ। शब्द अगम्मी दए सलाह, सच संदेशा इक्क जणाईआ। अन्ध अन्धेर दए मिटा, दीपक जोत नूर रुशनाईआ। बज़र कपाटी दए तुड़ा, द्वैती परदा आपे लाहीआ। अनहद राग दए सुणा, पंचम मिल मिल आपणा ढोला गाईआ। साचा जाम दए पिआ, आबहयात इक्क वरवाईआ। जगत विकारा करे फ़नाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आपणी खेल रचाईआ।

भगत भगवन्त खेल रच, रच रच वेख वखाइंदा। जुग जुग मार्ग लाए सच, साची गाथा आपे गाइंदा। लक्ख चुरासी राह देवे दस्स, बण पान्धी पन्ध मुकाइंदा। हरिजन मेला हस्स हस्स, हँस मुख दया कमाइंदा। हिरदे अंदर वस वस, आप आपणा भेव चुकाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी मस, अन्ध अन्धेर गवाइंदा। जन भगतां गाए हरि जू जस, शास्त्र सिमरत वेद पुरान नाल मिलाइंदा। जग जीवण दाता पूरी करे आस, निरासा रूप ना कोई वखाइंदा। एथे ओथे दो जहान श्री भगवान सद आवे पास, विछड़ कदे ना जाइंदा। लक्ख चुरासी करे बन्द ख़लास, आवण जावण पतित पावण बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन आपणा वेस वटाइंदा।

भगत भगवन्त इक्को वेस, वेस अनेक वटाईआ। लेखा जाणे हरि नरेश, नर नरायण बेपरवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग अन्तम गुरमुख सज्जण आपे वेख, सन्त सुहेले लए उठाईआ। लेखा जाणे पूरब रेख, लहणा लहणे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे माण वडयाईआ।

भगत वड्डिआई लोकमात, हरि जू हरि हरि आप दिवाइंदा। चरन प्रीती साची दात, नित नवित्त झोली पाइंदा। अन्तर मंतर बिन रसना जिह्वा सुणाए गाथ, निशअक्खर आप पढ़ाइंदा। सरगुण देवे सगला साथ, निरगुण निरगुण मेल मिलाइंदा। लहणा देणा तोड़ पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर पार कराइंदा। रव सस सूरज चन्न मण्डल मंडप दासी दास, बण बण सेवक सेव कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कहण शाबाश, शहनशाह आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त इक्को घर वसाइंदा। इक्को घर करे वसेरा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ।

हरि जू वसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मिल मिल करे चाउ घनेरा, चाउ घनेरा इक्क वरवाईआ। जूठा झूठा भरम भउ ढाहे डेरा, सच सुच दए दृढ़ाईआ। चार कुण्ट नौं खण्ड पृथ्मी दो जहान श्री भगवान शब्द अगम्मी पाए घेरा, पुरीआं लोआं आपणा बंधन पाईआ। कलिजुग अन्तम प्रगट होया निरगुण निरवैर सिँघ शेरा, शेर आपणा रूप वरवाईआ। भगत भगवन्त आदि अन्त जुगा जुगन्त इक्क दूजे नूं कहण मैं तेरा तूं मेरा, सोहँ ढोला रसना गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त दए समझाईआ।

भगत भगवन्त इक्को ढोला, सोहँ धार चलाइंदा। हँ ब्रह्म आपे बोला, सो पुरख निरँजण खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण बण बण तोला, हँ आपणा अंक जणाइंदा। एकंकार बण विचोला, साचा सालस आप हो जाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग रक्खदा रिहा परदा उहला, गुर अवतारां सेवा लाइंदा। कलिजुग अन्तम आपणा पूरा करे कौला, वेद व्यासा सच खुलासा जो लिखवाइंदा। प्रगट होए उप्पर धवला, धरनी धरत धवल समझाइंदा। नज़री आए एका नूर इल्लाही अव्वला, आलमीन हक़ हकीकत खोज खुजाइंदा। भेव चुकाए काहना कृष्ना सावल सवला, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण मुकट बैण नेत्र नैण नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आप जगाइंदा।

भगत भगवन्त जाइण जाग, जागरत जोत इक्क जगाईआ। अन्तर आत्म इक्क वैराग, बण वैरागी रिहा उपजाईआ। जन्म जन्म दा धोवे दाग़, दुरमत मैल दए धवाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, श्री भगवान वड्डी वडयाईआ। मेल मिलावा मोहण माधव माध, मोहणी आपणा रूप वखाईआ। चार जुग दी सुणे फ़रयाद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों काढ, आप आपणा भेव समझाईआ। धुर फ़रमाणा देवे दाद, नाम अमोलक वस्त झोली पाईआ। जगत नय्या चलाए सच जहाज़, खेवट खेटा रूप अनूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए मिलाईआ।

भगत मिलावा सच घर, घर साचा आप जणाइंदा। जन्म जन्म दा चुक्के डर, निरभउ आपणा भय वखाइंदा। आत्म परमात्म लए वर, वर दाता आप अखवाइंदा। लेखा चुक्के नारी नर, नर नरायण आपणे अंग लगाइंदा। आत्म अंदर साचे मन्दर उच्चे टिल्ले वेखे चढ़, सच सिँघासण पुरख अबिनाशण आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवन्त आपे फड़, सुरती शब्दी बंन्हे लड़, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा।

शब्दी सुरती साचा नाता, नित नवित्त जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण पिता माता, लोकमात वेख वखाईआ। साची सिखिआ इक्को गाथा, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। लहणा देणा चुकाए मस्तक माथा, पूरब वेखे बेपरवाहीआ। होए सहाई अनाथ नाथा, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ । जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, मेहरवान मेहरवान मेहर आपणी नज़र टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान एका दर बहाईआ।

भगत भगवान दर साचे बहिणा, नर हरि आपणा खेल कराइंदा। इक्क दूजे दा दर्शन नैणा, नैण नैणां नाल मिलाइंदा। आत्म परमात्म मन्ने कहणा, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा । जन्म जन्म दा चुक्के देणा, दे दे आपणी खुशी वखाइंदा। साचे भगत तन पाए गैहणा, बसत्र आपणे नाम रंगाइंदा। हरि का भाणा सिर ते सैहणा, साची सिखिआ सिख जणाइंदा। लक्ख चुरासी जूठा झूठा वहण वहणा, कूड़ी क्रिया नाल रुड़ाइंदा। अन्तम नाता तुट्टे मात पित भाई भैणा, साक सज्जण सैण नारी कन्त संग ना कोई जाइंदा। लाड़ी मौत लक्ख चुरासी खाए डैणा, राए धर्म आपणा खाता आप वखाइंदा। गुरमुख विरले हरि सरनाई रहणा,

सरनगत जिस जन आपणी आप दिवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान इक्क मकान, साचा मन्दर आप सुहाइंदा।

भगत भगवान इक्क मकान, मुकामे हक़ जणाईआ। भगत भगवान इक्क निशान, सचखण्ड निशाना दए वखाईआ। भगत भगवन्त इक्क ज्ञान, सोहँ अक्खर करन पढ़ाईआ। भगत भगवान इक्क दान, प्रेम वस्त झोली पाईआ। भगत भगवान इक्क अशनान, मिल मिल आपणी मैल गवाईआ। भगत भगवान इक्क ध्यान, ध्यान ध्यान विच्च रखाईआ। भगत भगवान इक्क पहचान, दूजी ओट ना कोई वखाईआ। भगत भगवान काया चोले अंदर वसण इक्क मिआन, दूजा मिआन ना कोई बणाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा गायण गान, गा गा आपणी खुशी मनाईआ। भगत भगवान नाता तोड़न सगल जहान, साचा नाता इक्क रखाईआ। भगत भगवान खेलण खेल महान, गोपी काहन रूप वटाईआ। भगत भगवान नौजवान, बिरध बाल ना कोई वखाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे नूं करन परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सैहज सुभाईआ।

भगत भगवान इक्क कहाणी, कह कह आपणा गीत बणाइंदा। भगत भगवान इक्को बाणी, बाण निराला तीर चलाइंदा। भगत भगवान एका मन्दर वसे सच मकानी, मुकाम किसे ना होर वखाइंदा। भगत भगवान इक्क दूजे तों होण कुरबानी, सीस धड़ वंड ना कोई वंडाइंदा। भगत भगवान खेले खेल राजा राणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपणे रंग रंगाइंदा।

भगत भगवान इक्क महल्ल, महिफ़ल आपणी रहे लगाईआ। भगत भगवान उच्च अटल, अट्टल मन्दर बैठे आसण लाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे नाल गए रल, जोती जोत जोत मिलाईआ। भगत भगवान विछड़ ना जाइण घड़ी पल, चौकड़ी जुग आपणा खेल वखाईआ। भगत भगवान एका दीपक जायण बल, तेल बाती ना कोई पाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दा मेटण सल, आप आपणा देण मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क दूजे नूं सच संदेशा घल्ल घल्ल, लोकमात सचखण्ड सचखण्ड लोकमात प्रगटाईआ ।

लोकमात सचखण्ड दुआरा, श्री भगवान आप प्रगटाइंदा। भगतां पावण आए सारा, नित नित वेस वटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर धूरू प्रहलाद देंदा रिहा सहारा, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी दे दे लारा, गुर अवतार वेख वखाइंदा। पीर पैगम्बर दे सहारा, लोकमात नय्या आप चढ़ाइंदा। चौदां तबक तबक अखाड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा।

साचा खेल श्री भगवन्त, जुग चौकड़ी आप कराईआ। अन्तम करे सर्ब दा अन्त, लोकमात रहण कोई ना पाईआ। गा गा गए सर्ब बेअन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका आपणे हत्थ रक्खे वड्डिआईआ।

हत्थ वड्डिआई वड्डा वड, श्री भगवान आप रखवाइंदा। निरगुण सरगुण खेल करे अड्ड अड्ड, अन्तम इक्को रंग वखवाइंदा। लक्ख चुरासी आपणे विच्चों कड्ढ, अन्तम आपणे खाते पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वंड वंड गए हद्द, शत्तरी ब्रह्मण शूद्र वैश वरन बरन गंढ पवाइंदा। कलिजुग अन्तम प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ आपणा खेल वखवाइंदा। शब्द जणाए महिमा अकथ्थ, बोध अगाध नाम दृढ़ांइंदा। वेखणहारा काया मन्दर साढे तिन्न हत्थ, नौं खण्ड पृथमी घर घर फेरा पाइंदा। आत्म गाए ना साचा जस, परमात्म नज़र किसे ना आइंदा। शरअ शरीअत रही नच्च, दीन मज़्ब डौरू वजाइंदा। कूक कुरलाए काया माटी भाण्डा कच्च, जिस घड़िआ तिस दा अन्त कोई ना पाइंदा। त्रैगुण अंदर रहे मच्च, पंज तत्त अगनी लाइंदा। हरि का मन्दर दिसे ना सच, चार खाणी चार बाणी जेरज अंडज उत्भुज सेतज नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान दया कमाइंदा।

दयानिध ठाकर स्वामी, आपणी दया कमाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, घर घर वेख वखवाईआ। पुरख अकाल अगम्मी बाणी, एका अक्खर करे पढ़ाईआ। सतिजुग दी साची राणी, साचा मार्ग दए वखवाईआ। इक्क वखाए पद निरबाणी, निराकार बेपरवाहीआ। भगत भगवन्त दए निशानी, जगत निशाना दए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ।

शहनशाह वड देवी देवा, देवत सुर आपणे रंग रंगाइंदा। आदि जुगादी इक्को मेवा, अमृत रस मुख पवाइंदा। करे खेल अलक्ख अभेवा, अगम्म अथाह बेपरवाह आपणी धार चलाइंदा। जन भगतां लेखे लाए रसना जेहवा, गुण आपणा इक्क समझाइंदा। कौस्तक मणीआ मस्तक लाए थेवा, जोती नूर डगमगाइंदा। सदा सुहेला इक्क इकेला, अकल कल आपणी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहिंदा।

सिफ्ती सिफ्त सलाहे जगत, सिफ्त विच्च कदे ना आईआ। देवे वड्डिआई हरि जू भगत, भगवान आपणी गोद बहाईआ। लेखे लाए बूंद रक्त, मात गर्भ होए सहाईआ। अन्तम मेला जोती जोत नार कन्त, कन्त कन्तूहल खुशी मनाईआ। चोली चाढ़े रंग बसन्त, बसन बनवारी आप रंगाईआ। एका अक्खर मणीआ मंत, ममता मोह दए मिटाईआ। सोहँ ढोला साचा छंत, छत्ती राग रहे जस गाईआ। आदि जुगादि शब्द गुर गुर बणाई बणत, विष्न ब्रह्मा शिव रूप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरंतर ब्रह्म देवे दान, पारब्रह्म होए हैरान, भगतां मिल्या श्री भगवान, भगवन मेला विच्च जहान, जीवण जुगत जन आपणे हत्थ रखवाईआ। (१८ जेठ २०१६ बिक्रमी सीतल सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि भगत तेरा भगती भाउ, हरि इक्को इक्क वखाईआ। सदा प्रभ मिलण दा रहे चाउ, चाउ घनेरा इक्क जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहो, जुग जुग आपणा खेल कराईआ। जन भगत उठाए फड़ फड़ बाहों, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। निथाविआं देवे साचा थाउँ, चरन कँवल सरनाईआ। गुरमुख बालक वेखे बण पिता माउँ, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत दया कमाईआ।

प्रभ मिलण दी भगत आस, भगती ध्यान लगाईआ। जन्म कर्म दी बुझे प्यास, बरन ज़ात रहण ना पाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, चन्द इक्को नूर रुशनाईआ। दरस दिखाए साख्यात, रूप अनूप जणाईआ। सोवत जागत पुच्छे वात, आलस निंदरा ना कोई रखाईआ। इक्को दस्से आपणी गाथ, ढोला नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल कराईआ।

भगत भगवान इक्को आस, दूजी आस ना कोई रखाईआ। अन्तर अन्तर बुझे प्यास, बाहर बसन्तर ना कोई लगाईआ। रस रसीआ देवे इक्क मिठास, शंकर खण्ड तुल ना राईआ। सदा सुहेला वसे पास, दिवस रैण विछड़ ना जाईआ। साचा करे हास बलास, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान वेख वखाईआ।

भगतन सदा इक्को मंग, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सच सुहञ्जणी सेज सोहे पलँघ, फूलण बरखा आप लगाईआ। कन्त कन्तूहल दर दरवाजा आए लंघ, घर सज्जण फेरा पाईआ। निज रसीआ देवे निज अनन्द, परमानंद विच्च समाईआ। प्रेम प्यार विच्च वेखे हस्स, सोहँ हँसा राग अलाईआ। अगम्मी भगती देवे दस्स, जगत भगती ना कोई सिखाईआ। सच सुनेहड़ा आपणा दस्स, बण पान्धी पन्ध मुकाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे दे दोवें वस, इकल्ला कम्म कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी होए इक्ठ, इक्क इक्क लेखा आप मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

भगत भगवान इक्को राह, रहबर अवर ना कोई जणाया। निरगुण सरगुण मेल मिला, मिल आपणा मंगल गाया। जोत निरँजण तेल चढ़ा, आदि निरँजण सगन मनाया। साचा खेड़ा दए वसा, झूठा झेड़ा आप मुकाया। खुल्ह्रा वेहड़ा दए करा, कूड़ी क्रिया बाहर कढाया। सन्त सुहेले लए उठा, गुर चेले रंग रगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाया।

भगवान भगत इक्को मन्दर, दरवाजा नज़र किसे ना आइंदा। इक्क दूजे दे वड़न अंदर, औंदा जांदा नज़र कोई ना आइंदा। उच्ची कूक कूक गायण अंदरे अंदर, आत्म परमात्म ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान इक्को घर वसाइंदा।

भगत भगवान घर इक्क वसेरा, विछड़ कदे ना जाईआ। ज़ात पात करे नबेड़ा, वरनां बरनां पन्ध मुकाईआ। साची सरना बन्ने बेड़ा, आपणे कंध उठाईआ। करावणहारा हक़ नबेड़ा, हकीकत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगवन लेखा लेखे पाईआ।

भगत भगवान इक्को वंड, वंडणहारा आप वंडाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे नूं पावण ठंड, विछोड़ा अगन बुझाईआ। भगत भगवान आत्म परमात्म सच अनन्द, बत्ती दन्द ना कोई सालाहीआ। भगत भगवान दा गीत अंदर छन्द, सोहला इक्क दृढ़ाईआ। भगत भगवान चुक्के पन्ध, अद्धवाटे फेरा कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ।

भगत भगवान इक्को आसा, तृष्ना होर ना कोई जणाइंदा । भगत भगवान सच भरवासा, भाण्डा भरम भन्नाइंदा। भगत भगवान दासी दासा, बण सेवक सेव कमाइंदा। भगत भगवान साचा राखा, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। भगत भगवान देवे दाता, वस्त अमोलक झौली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा।

भगत भगवान साचा जोड़ा, हरि जोड़ी आप जुड़ाइंदा। भगत भगवान आपे बौहड़ा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। भगत भगवान लेख लिख के देवे कोरा, कलम शाही ना कोई रखाइंदा। भगत भगवान लहणा चुक्के मोरा तोरा, तेरा मेरा परदा ना कोई रखाइंदा । भगत भगवान जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा।

भगत भगवान सज्जण साक, साका आपणा आप जणाईआ। भगत भगवान भविख्त वाक, दाता दानी दए जणाईआ। भगत भगवान सच्चा नात, नाता बिधाता वेख वखाईआ। भगत भगवान मेटे अन्धेरी रात, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाईआ। भगत भगवान रहण ना नार कमज़ात, बुद्ध बबेकी रूप वखाइंदा। भगत भगवान मेल मिलावा कमलापात, कँवल नैण डगमगाइंदा। भगत भगवान इक्क दूजे नूं कहण शाबाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप कराइंदा।

साचा खेल करे जगदीश, जगदीशर हत्थ वडयाईआ। जुग चौकड़ी पीसण लिआ पीस, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगत चक्की नाम चलाईआ। नित नवित्त कर कर हित्त दे नाम हदीस, निशअक्खर वड वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगवन लेखा झोली पाईआ।

भगत भगवान लेख इक्क, एका वार जणाया। भगत भगवान भेख इक्क, एका राह

दरसाया। भगत भगवान खेड इक्क, खलारी इक्को इक्क जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार कमाया।

भगत भगवान नित उडीकां, नैण नैण ध्यान लगाईआ। भगत भगवान ना कोई शरीका, शिरकत विच्च कदे ना कोई आईआ । भगत भगवान इक्क तौफीका, तौफीक नूर खुदाईआ । भगत भगवान इक्क हदीसा, मुरीद मुशर्द करे पढ़ाईआ। भगत भगवान लेखा जाणे जीव जी का, अगम्म अगोचर बेपरवाह सच्चा शहनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान रंग वखाईआ।

भगत भगवान भगती विचोला, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। पंज तत्त काया चुक्के डोला, कन्ध आपणे भार उठाइंदा । पूरब लेखा पूर करे कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाइंदा । जन भगतां कोलों कोई ना रक्खे उहला, परदा आपणा आप चुकाइंदा। धुर संदेस सुणाए ढोला, सोहँ राग अलाइंदा। सभ दा करे भार हौला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान शब्द अगम्मी इक्क फ़रमाण, धुर संदेसा देवे आण, नर नरेशा खेल कराइंदा।

(१२ चेत २०२० बिक्रमी हरि भगत दवार जेठूवाल)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत कहण दस्स भगवान, प्रभू की तेरी वडयाईआ। कलिजुग अन्त होए हैरान, तेरा भेव कोई ना पाईआ। चारों कुण्ट शरअ शैतान, घर घर करे लड़ाईआ। नाम दिसे ना किसे मकान, गुर दर मन्दर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले देण दुहाईआ। धर्म मिले ना कोई निशान, दहि दिशा होई हलकाईआ। साचा राग सुणे ना कोई कान, धुन आत्मक नाद ना कोई वजाईआ। गा गा थक्की रसना जिह्वा ज़बान, ज़ेर ज़बर तेरी समझ कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ ।

भगत कहण प्रभ साचा मीता, साची रीत दए बताईआ। तेरा धाम सदा अनडीठा, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के मन्दर मसीतां, महिफ़ल घर घर डेरा लाईआ । नूर नज़र ना आया अतीता, त्रैगुण परदा ना कोई लाहीआ। नाता चुक्के ना हस्त कीटां, ऊँच नीच भेव ना कोई गवाईआ। काया होए ना ठांडी सीता, सीतल धार ना कोई वहाईआ । निरगुण बज्झे ना हक़ प्रीता, प्रेम प्रीती ना कोई सिखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग कोटन वार बीता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ।

भगत कहण भगवान दस्स, दोए जोड़ करन अर्ज़ीईआ। सृष्ट सबाई वेख्या नस्स

नस्स, मार्ग नज़र कोई ना आईआ। कूड़ी क्रिया गए फस, फाँसी जम ना कोई कटाईआ। धीरज जत्त ना रिहा हठ, सति सन्तोख ना कोई रखवाईआ। नहा नहा थक्के तीर्थ तट्ट, अठसठ फेरा पाईआ। पढ़ पढ़ पुस्तक गए अक्क, अन्तर अक्ख ना कोई खुल्हाईआ। नबेड़ा करे ना कोई हक़, हकीकत दए ना कोई जणाईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, रत्ती रत्त ना कोई सुकाईआ। घर मिले ना ब्रह्म मत, पारब्रह्म ना कोई सरनाईआ। लहणा चुक्के ना हत्थो हत्थ, ख़ाली हत्थ देण दुहाईआ। किथे लुक्यों पुरख समरथ्थ, तेरी ज़ात नज़र ना आईआ। नज़र ना आए अगम्मी हट्ट, वणजारा हट्ट ना कोई खुल्हाईआ। मणका मणका माला लई रट, मन का मणका ना कोई भवाईआ। मिल्या नूर ना जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोई गवाईआ। सच्चा साहिब ना दिसिआ रघुनाथ, रघुपत रूप ना कोई दरसाईआ। मिल्या मेल ना कमलापात, नेत्र नैण नैण दरसाईआ। कर किरपा दे दात, दर तेरे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे आस रखवाईआ।

भगत कहण श्री भगवन्त, तेरा राह नज़र ना आइंदा। कलिजुग नज़र ना आए कोई सन्त, सतिगुर साजण मेल मिलाइंदा। त्रैगुण माया परदा पाया बेअन्त, दूई द्वैत ना कोई मिटाइंदा। गढ़ तुटे ना हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोई जणाइंदा। भेव ना पाए कोई पंडत, बोध अगाध ना कोई समझाइंदा। मिले मेल ना किसे अखण्डत, खड़ग खण्डा ना कोई चमकाइंदा। नाता तुटे ना जेरज अंडज, उत्भुज सेतज पन्ध ना कोई मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस झुकाइंदा।

भगत कहे भगवान अगम्म, अगम्म तेरी वडयाईआ। कवण जाणे हरि तेरा कम्म, नेहकरमीं कर्म कमाईआ। गा गा थक्के दमां दम, पवण स्वास सिफ्त सालाहीआ। लेखे लग्गा ना काया चम्म, चम्म दृष्टी ना कोई बदलाईआ। हरख सोग ना चुक्कया ग़म, चिन्ता रोग ना कोई मिटाईआ। भाण्डा भरम ना देवे कोई भन्न, कूड़ी क्रिया ना बाहर कढ्ढाईआ। प्रकाश होए ना नेत्र अन्न्ह, जोत निरँजण ना कोई रुशनाईआ। नाद शब्द ना सुणे कोई धुन, अनरागी राग ना कोई सुणाईआ। नाता तुट्टे ना वासना मन, मनसा पूर ना कोई वखाईआ। साचा मिल्या ना नाम धन, फिर फिर वेखी सर्ब लोकाईआ। वड़ वड़ बैठे छपर छन्न, महल्ल अट्टल ना कोई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, जिस बिध तेरा दर्शन पाईआ।

भगत कहे भगवान तेरा दरस, बिन तेरी किरपा नज़र किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी रहे तरस, कोटन कोट ध्यान लगाइंदा। कर किरपा हरि मेघ बरस, तृष्ना तृखा सर्ब गवाइंदा। लेखा जाणे अर्श फर्श, काया कुरा खोज खुजाइंदा। कलिजुग अन्तम रहे भटक, भावना कोई ना पूर कराइंदा। नौं दुआरे रहे अटक, दसवें मेल ना कोई मिलाइंदा। साची नज़र ना आए सड़क, मार्ग राह ना कोई पाइंदा। पंच विकारा चढ़या कटक, खण्डा खड़ग ना कोई उठाइंदा। लक्ख चुरासी विच्च रहे लटक, फड़ बाहों पार ना कोई कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे ध्यान लगाइंदा।

भगत कहे भगवान तेरा ध्यान, ध्यान ध्यान विच्च जणाईआ। बिन पढ़यां दे ज्ञान, चौदां विद्या कम्म किसे ना आईआ। चौदां लोक होण हैरान, मिले सरन तेरी सरनाईआ। चौदां तबक नैण शरमाण, अक्रव सके ना कोई उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव ढोले गाण, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मंगी इक्क सरनाईआ।

भगत भगवान दे सरना, सरनगत इक्क अखवाइंदा। नेत्र नैण इक्क खुल्ला, निज नेत्र मंग मंगाइंदा। जन्म मरन पन्ध मुका, आवण जावण गेड़ कटाइंदा। दो जहानां लेखा दे मुका, राए धर्म ना डंन लगाइंदा। चित्रगुप्त हिसाब ना सके वरवा, लाड़ी मौत ना कोई परनाइंदा। अन्तम आपणी गोदी लए उठा, दूजी आस ना कोई रखाइंदा। कबीर जुलाहा गिआ समझा, सच संदेसा इक्क अलाइंदा। महल्ल अट्टल होए रुशना, दीपक दीआ इक्क जगाइंदा। जिस जन मिले बेपरवाह, बेपरवाही खेल वरवाइंदा। फड़ बाहों गले लए लगा, आप आपणे रंग समाइंदा। चरन कँवल लए बहा, थिर घर आपणी वंड वंडाइंदा। सचखण्ड दुआरा दए सुहा, सोभावन्त सोभा पाइंदा। साचे तख्त डेरा ला, तख्त निवासी हुक्म वरताइंदा। पृथ्मी आकाश पार करा, गगन मण्डल चरनां हेठ दबाइंदा। मण्डल रासी रास रचा, गोपी काहन नाच नचाइंदा। पुरख अबिनाशी सच्चा शहनशाह, पातशाह इक्को नज़री आइंदा। भगत भगवान लेखे लए लगा, लेखा आपणे हत्थ रखवाइंदा। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त साची सिखिआ दए समझा, समझ समझ विच्च मिलाइंदा। इशारे नाल दस्से रज़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आप दृढ़ांइंदा।

जन भगतां अन्त जाणा जाग, श्री भगवान आप जगाईआ। देवणहारा साची दात, निरगुण दाता वड वडयाईआ। कलिजुग मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द करे रुशनाईआ। नज़री आए इक्क इकांत, इक्क इकल्ला आसण लाईआ। सच सुणाए अगम्मी गाथ, सोहँ अक्खर करे पढ़ाईआ। लहणा देणा वेखे मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान रिहा जणाईआ।

भगवान कहे भगत मेरे मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। सोहँ ढोला गौणा गीत, हरि गोबिन्द मेल मिलाइंदा। सतिजुग दी साची रीत, सो पुरख निरँजण आप चलाइंदा। खैहड़ा छुट्टे मन्दर मसीत, काया मन्दर अंदर आपणा राग अलाइंदा। माणस जन्म लैणा जीत, हार रूप ना कोई वटाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म करे ठांडी सीत, सीतल धारा इक्क वहाइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म लगाए सच प्रीत, प्रीतीवान बंधन पाइंदा। लेखा चुक्के हस्त कीट, घट घट इक्को नज़री आइंदा। मिट्ठा करे काया कौड़ा रीठ, अमृत रस इक्क भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, भगत भगवान आप दृढ़ांइंदा।

भगत कहे सुण सचे सज्जण, भगवान दए वडयाईआ। चरन धूढ़ी निर्मल मज़न, दुरमत

मैल धवाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल ठाकर स्वामी आया परदे कज्जण, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। नाम भगती रक्खे मग्न, खुमारी इक्को इक्क चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच कहाणी आप सुणाईआ।

सच कहाणी सुणाए गाथा, भगत भगवान दया कमाइंदा । आदि जुगादी दासी दासा, जुग जुग सेव कमाइंदा। कलिजुग अन्त नूर जोत प्रकाशा, पंज तत्त चोला ना कोई वखाइंदा । निरगुण निरगुण देवणहार दिलासा, सरगुण आपणा बंधन पाइंदा। पूरी करे हरिजन आसा, निरासा रूप ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाइंदा।

जन भगतां दया कमावांगा। निरगुण हो के मेल मिलावांगा। सरगुण कूड़ा पन्ध मुकावांगा। नाम छन्द इक्क सुणावांगा । बन्दीख़ाना तोड़ तुड़ावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछड़े मेल मिलावांगा।

जुग विछड़े आप मिलाएगा। मेहरवान दया कमाएगा। पूरब लहणा झोली पाएगा । नेत्र नैणां नज़री आएगा। रसना कह ना कोई सुणाएगा। भगत रीती इक्क वड्डिआएगा । साची नीती आप जणाएगा। हस्त कीटी रंग रंगाएगा। अनडीठी खेल खलाएगा। सुरती शब्दी मेल मिलाएगा। अकाल मूरती कार कमाएगा। नाद तूरती इक्क सुणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाएगा।

जन भगतां वेख वखावेगा। आत्म अन्तर परदा लाहवेगा। नौं दुआरे पार करावेगा । सुखमन टेडी बंक चरनां हेठ रखावेगा। ईड़ा पिंगल मूंह दे भार सुटावेगा। अमृत आत्म जाम पिआवेगा । निझर झिरना इक्क झिरावेगा। अज्ञान अन्धेर मिटावेगा। दीपक दीआ डगमगावेगा। आत्म सेजा सोभा पावेगा। सुरती शब्दी रंग रंगावेगा। बज़र कपाटी तोड़ तुड़ावेगा। साची हाटी इक्क वखावेगा। आत्म सेजा सोभा पावेगा। ब्रह्म आपणा ब्रह्म जणावेगा। पारब्रह्म प्रभ खेल खलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप उठावेगा।

जन भगतां आप उठाएगा। प्रभ आपणा परदा लाहेगा। चारों कुण्ट नज़री आएगा। निरगुण दीप इक्क रुशनाएगा। कल कलकी फेरा पाएगा। निहकलंका डंक वजाएगा। राउ रंकां आप हिलाएगा। भगत दुआर बंक इक्क सुहाएगा। साचा मार्ग इक्क वखाएगा । दर दरवाज़ा इक्को वार बणाएगा। जो जन आ के सीस निवाएगा। फड़ बाहों गोद बहाएगा । आत्म परमात्म मेल मिलाएगा। ब्रह्म पारब्रह्म जोड़ जुड़ाएगा। ईश जीव जगदीश आपणी गंढु वखाएगा। नाम मरदंग इक्क सुणाएगा। चाढ़ रंग वेख वखाएगा। सूरा सरबन्ग दया कमाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां मेल, सोहँ ढोला फेर गाएगा।

जो दर दरवाज़े आवेगा। प्रभ साचे दर्शन पावेगा। निरगुण दाता नज़री आवेगा। पुरख अकाल इष्ट दरसावेगा। सृष्ट सबाई नाता तोड़ तुड़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप वखावेगा।

साची रीत दस्से भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दा सच निशान, लोकमात झुलाईआ। तख़त निवासी नौजवान, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। संदेसा देवे हुक्मरान, हाकम इक्को इक्क वडयाईआ। सच सिँघासण इक्क परवान, नाम परवाना झोली पाईआ। भगत भगवान लए पछाण, बेपहचान वेख वखाईआ। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जो जन सोहँ ढोला गाण, श्री भगवान होए सहाईआ। अंदर बाहर गुप्त ज़ाहर एथे ओथे दो जहानां मिले आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां रिहा समझाईआ।

भगत कहण प्रभ तेरी ओट, ध्यान इक्को इक्क रखाईआ। कलिजुग आहलणिउँ डिगे बोट, सके कोई ना मात उठाईआ। नेत्र नैण नीर रोत, रोवत रोवत रोवत देण दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी कर ना सके सोच, सोच विच्च कदे ना आईआ। बिन तेरे नाम तेरे कलमे आई ना किसे होश, होछी मत ना कोई गवाईआ। तेरे बरदे होए बेदोश, दोश लग्गे ना कोई राईआ। तेरे मिलण दा साचा शौक, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। तेरे दर ना सकीए पहुंच, तेरा घर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे दरस बेपरवाहीआ।

भगत कहण तेरा दूर दुराडा पन्ध, पान्धी पन्ध ना कोई मुकाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गा गा थक्की तेरा छन्द, शहनशाह तेरा रंग ना कोई वखाइंदा। सिफ्त सालाही तेरे बन्द, बन्दीख़ाना ना कोई तुड़ाइंदा। कर किरपा आपणा दे सच्चा अनन्द, अनन्द इक्को इक्क नज़री आइंदा। जुग जन्म दी टुट्टी गढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा सच्चा भाइंदा।

भगवान कहे भगत प्यार, प्यार प्यार नाल कुड़माईआ। जुग चौकड़ी जगत विहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग रिहा हंढाईआ। कलिजुग अन्तम खेल नयार, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग दा करज़ा दए उतार, मकरूज आपणी सेव कमाईआ। सन्त सुहेले गुरू गुर चेले भगत भगवान मेले एका वार, एकंकारा होए सहाईआ। भगत वछल गिरवर गिरधार खोलूणहार किवाड़, सच दरबारे सोभा पाईआ। सन्त सुहेले वेखे साचे लाड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सेहरा सीस हरि गुंदाईआ।

भगत जनो सद रक्खो याद, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। कलिजुग अन्त

सुणे फ़रियाद, बेपरवाह फेरा पाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार निराकार अजूनी रहित रक्खे लाज, अनभव आपणी कार कमाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदिआं शब्द सरूपी मारे वाज, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ।

भगत जनो ना करो विचार, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। कलिजुग अन्तम करे पार, नय्या नौका नाम चढ़ाइंदा। इक्को ढोला बोलो, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकार, जै जैकार लोक परलोक कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तुहाढ्डे चलण नाल नाल, सगला संग रखवाइंदा। भगत दुआरे दिते बिठाल, फड़ बाहों हुक्म मनाइंदा। अन्तम सारे होए कंगाल, शहनशाह इक्को नज़री आइंदा। नानक गोबिन्द पूरा करे सवाल, मूसा ईसा मुहम्मद आसा झोली पाइंदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले परबत सुत दुलारा दए उठाल, भेव अभेदा आप जणाइंदा। साचे मन्दर महल्ल अटल उच्च मनार सम्बल नगर खेल करे कमाल, करता आपणी कार कमाइंदा। सुत दुलारा अगम्मी बणे दलाल, दो जहानां सेव कमाइंदा। लक्ख चुरासी विच्चों भगत भगवन्त लए भाल, अंदर वड़ वड़ वेख वखाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, शाह पातशाह आपणी कार कमाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुशर्द आपणा फेरा पाइंदा। घर घर दर दर जन भगतां देवे आप जुमाल, नूर नुराना नज़री आइंदा। नाता तोड़ काल महांकाल, आप आपणी गोद वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, भगत भगवान शब्द ज्ञान, देवणहारा सच्चा दान, अनमुलड़ी दात आप वरताइंदा।

अनमुलड़ी दात चाढ़े रंग, रंग रंगीला इक्क अखवाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, पावा चूल ना कोई बणाईआ। उप्पर बैठ सूरा सरबन्ग, भगवान भगत वेखे चाईं चाईंआ। सन्त सुहेला विरला आए लघँ, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। गुरमुखां देवे इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। गुरसिख ढोला गौंदे सोहँ छन्द, संसा रोग रहे ना राईआ। नाता टुट्टा लक्ख चुरासी बन्द, बन्दीख़ाना ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को वार जणाईआ।

भगतां देवे सच दलील, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। दरगाह साची लभ्भे ना कोई वकील, वुकला नज़र कोई ना आइंदा। ओथे चले ना कोई अपील, हुक्म इक्को इक्क सुणाइंदा। कलिजुग वेला अन्त अख़ीर, बीस बीसा आप दृढ़ांइंदा। बिन हरि पुरख निरँजण कट्टे ना कोई ज़ंजीर, कड़ी कड़ी बन्द ना कोई खुल्हाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे होए दिलगीर, धीरज धीर ना कोई धराइंदा। लक्ख चुरासी नेत्र वहावे नीर, दुखीआं दर्द ना कोई वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान इक्को घर वखाइंदा।

भगत जनो हरि वेखो घर, हरि मन्दर मिले वडयाईआ। दो जहानां चुक्के डर,

भय रूप ना कोई जणाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, हरि सतिगुर वड वडयाईआ। सच महल्ले जाणा चढ़, अद्धविचकार ना कोई अटकाईआ। सोहँ ढोला लैणा पढ़, आत्म परमात्म होए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चरन कँवल उप्पर धवल देवे इक्क सरनाईआ। (२२ चेत २०२० बिक्रमी नसीब सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत भगवान कर मंज़ूर, माणस देवणहार वडयाईआ। जन्म कर्म बख्श कसूर, मानुख आपणे लेखे लाईआ। भंडारा भर शब्द भरपूर, मनुश होवे सदा सहाईआ। नेत्र बख्शे दरसन नूर, नूर नूराना नज़री आईआ। पन्ध मुकाए नेड़े दूर, घर घर आपणा डेरा लाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया मोह मुकाईआ। हरिजन बख्शे चरन धूड़, चरनोदक नाम पिआईआ। सदा सहाई हाज़र हज़ूर, स्वच्छ सरूपी रूप वरवाईआ। जन भगतां रहे सदा मशकूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग साची कार कमाईआ।

भगत भगवान पूरी मनसा, मानस देवणहार वडयाईआ। गुरमुख बणाए रूप हँसा, हँस मुख सिफ्त सालाहीआ। सोहँ धार बणाए बंसा, बंस इक्को इक्क वरवाईआ। कलिजुग कूड़ा रहे ना विच्च कंसा, रावण रूप ना कोई जणाईआ। हरिजन उपाए विच्चों सहँसा, साहिब सतिगुर होए सहाईआ। पुरख अकाल बणाई अंसा, अंगीकार आपणे अंग लगाईआ। पूरी करे सभ दी मनसा, तन मन्तव दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ।

माणस लाए आपणे लेखे, लेखा आपणे हत्थ रखवाईआ। मानुख रूप घर घर वेखे, मानुश बूझ बुझाईआ। भगत भगवान कढ्ढे भुलेखे, भरमी भरम गढ़ तुड़ाईआ। निरंतर ब्रह्म करे हेते, अन्तर आपणा मेल मिलाईआ। भाग लग्गे काया खेते, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। गुरमुख तेरा कोई ना लए ठेके, कीमत तेरी ना कोई चुकाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत, श्री भगवान पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मनुश आपणी झोली पाईआ।

मनुश मनुख माणस प्रभ दी झोली, हरि झूला नाम दवाइंदा। निरगुण सरगुण चुक्के डोली, बण कहार कंध उठाइंदा। तोरी जाए हौली हौली, अगला पन्ध मुकाइंदा। मनमुख जीव पावण रौली, चारों कुण्ट कूक सुणाइंदा। कूड़ी क्रिया खेले होली, माया ममता रंग रंगाइंदा। गुरमुख बोलण इक्को बोली, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ राग सच्चा भाइंदा। जोत निरँजण बणे वचोली, वचोला होर ना कोई वरवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान आप मिलाइंदा।

माणस मानुख मानुश, माणस मनुख मनुखता दए वडयाईआ। सोहे सुहञ्जणी साची रुत्त, रुत्त आपणे नाल मिलाईआ। भगत भगवान इक्क दूजे नूं रहे पुच्छ, जुग जुग दिती क्यों जुदाईआ। कवण कूटे रहें लुक, दिशा हत्थ किसे ना आईआ। बिरहों अंदर गए सुक्क, डाली नज़र कोई ना आईआ। अन्तम पैंडा रिहा मुक्क, मुकी वाट पराईआ। प्रभ आ के गोदी चुक, इक्क तेरी ओट तकाईआ। तेरे मिलण दी लग्गी भुक्ख, भुक्खिआं धीर ना कोई धराईआ। नाता जोड़ पिउ पुत्त, पिता पूत तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरन कँवल जोड़ जुड़ाईआ।

माणस जोड़ चरन कँवल, मानुख मिले सरनाईआ। मानुश वड्डिआई उप्पर धवल, हरि करता होए सहाईआ। अमृत जाम पिआए पौहल, पहला रूप दरसाईआ। नूर वखाए आपणा अव्वल, इल्लाही रूप धराईआ। दूजे पूरा करे कँवल, कीता कौल निभाईआ। तीजे खेल सावल सवल, नेत्र नैण खुल्हाईआ। चौथे प्रेम प्रीती अंदर होवे बवल, सुध बुध कोई रहण ना पाईआ। पंजवें सेवक बण के करे चवर, अवर आपणी कार कमाईआ। छेवें छप्पर छन्न छुहाए गहर गवर, हरि गम्भीर फेरा पाईआ। सत्तवें सति सतिवादी कूड़ी क्रिया देवे सवर, करे सफ़ाई थाउँ थाईंआ। अठवें अठां तत्तां नाता तोड़े मड़ी कवर, मकबरा रूप ना कोई जणाईआ। नौवें नौं दर देवे सबर, सबर प्याला इक्क पिआईआ। दसवें दस्म दवारी शब्द गुरू नज़री आए बब्बर, शेर आपणा रूप वटाईआ। निउँ निउँ सजदा करे अम्बर, ज़िमीं असमान सीस झुकाईआ। भगत भगवान रचे सवम्बर, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, माणस मेला सैहज सुभाईआ।

माणस मेला मिलणी जगदीस, जगदीसर दया कमाइंदा। लक्ख चुरासी कूड़ी क्रिया लेखा चुके पीसण पीस, सच हदीस इक्क सुणाइंदा। छत्तर झुला साचा सीस, साहिब सुल्तान हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, देवे दान बीस बीस, दूआ सिफ़रा ज़ीरो भगत भगवान बणाए हीरो, हीरा चीरा सीस जगदीस आप सुहाइंदा। (१४ जेठ २०२० बिक्रमी गुरा राम)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगवान कहे मेरी पूंजी रास, जन भगत अखवाईआ। भगत कहे मेरा पिता मात, श्री भगवान बेपरवाहीआ। भगवान कहे मेरा सन्त सांस, साह साह समाईआ। सन्त कहे मेरा भगवान नूर जोत प्रकाश, नूर नूर दरसाईआ। भगवान कहे मेरी गुरमुख आस, जुग जुग आस जणाईआ। गुरमुख कहे श्री भगवान साख्यात, सदा सदा होए सहाईआ। भगवान कहे मेरा गुरसिख दास, नित नित सेव कमाईआ। गुरसिख कहे भगवान सदा वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। श्री भगवान कहे मन्मुक्ख रहे उदास, धीरज सति ना कोई धराईआ।

मनमुख कहे मैं होया निरास, मेरी सार किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

भगवान कहे मेरी भगत पूंजी, वस्त अमोलक इक्क जणाइंदा। सन्त सज्जण मेरी साची कुन्जी, सच भण्डारा इक्क रखाइंदा। गुरमुख सज्जण लेखा चुकावण भाउ दूजी, दूई धार ना कोई वखाइंदा। गुरसिख सिक्खया इक्को सूझी, सतिगुर चरन ध्यान लगाइंदा। माण टुटे कूड़ी बुद्धि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा।

भगवान कहे मेरा भगत अतीत, त्रैगुण विच्च कदे ना आईआ। भगत कहे प्रभ ठांडा सीत, सीतल धार वहाईआ। भगवान कहे मेरा भगत गीत, जुग जुग ढोला गाईआ। भगत कहे प्रभ साची प्रीत, आदि जुगादि निभाईआ। भगवान कहे मेरा भगत मेरी रीत, जुग चौकड़ी खेल कराईआ। भगत कहे भगवान मेरा मन्दर मसीत, इष्ट इक्को नज़री आईआ। भगवान कहे मेरा भगत सदा जग जीत, जीवण मुकत अखवाईआ। भगत कहे भगवान सदा अतीत, सचखण्ड वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव आपणे हत्थ रखाईआ।

भगवान कहे मेरा भगत सुहञ्जणा, सोभा साची पाइंदा। भगत कहे भगवान मेरा अञ्जणा, नेत्र नैण ज्ञान खुल्हाइंदा। भगवान कहे मेरा भगत मेरा सज्जणा, साचा सैण नज़री आइंदा। भगत कहे भगवान मेरा मज़ना, दूजा ताल ना कोई सुहाइंदा। भगवान कहे मैं भगतां परदा कज्जणा, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। भगत कहे मैं तेरे चरन सजणा, दूजा मन्दर ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कारे लाइंदा।

भगवान कहे मेरा भगत गहर गम्भीर, गवर सार किसे ना आईआ। भगत कहे भगवान मेरी तस्वीर, सदा सद इक्को नज़री आईआ। भगवान कहे मेरा भगत चोटी चढ़े अखीर, दूजा पन्ध ना कोई मुकाईआ। भगत कहे भगवान बेनज़ीर, नज़र किसे ना आईआ। भगवान कहे भगत इक्क तौफीक, दूजा रफीक ना कोई बणाईआ। भगत कहे भगवान लाशरीक, शरअ करे ना कोई लड़ाईआ। भगवान कहे भगत मेरे नज़दीक, निज घर बैठा डेरा लाईआ। भगत कहे भगवान मेरी प्रीत, प्रीतीवान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाईआ।

भगवान कहे मेरा भगत अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। भगत कहे श्री भगवान कदे ना देवे पिठ, जुग जुग आपणा मुख दिखलाइंदा। भगवान कहे मेरा भगत लक्ख चुरासी लए जित, हार रूप ना कोई बणाइंदा। भगत कहे भगवान देवे साची सिख, सिख्या इक्को इक्क समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप दृढ़ांइंदा।

भगवान कहे मेरा भगत मीत, मित्र इक्क अखवाईआ। भगत कहे मेरा भगवान इक्क अतीत, नीतीवान सदा अखवाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, राउ रंक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान दोवें देवणहार वडयाईआ।

भगवान कहे मेरा भगत वड्डा, वड्डी वड वडयाईआ। भगत कहे मेरा भगवान वड्डा, जिस आदि बणत बणाईआ। भगवान कहे मेरा भगत वड्डा, जो मेरा नाम धिआईआ। भगत कहे भगवान वड्डा जिस आपणी बूझ बुझाईआ। भगवान कहे मेरा भगत वड्डा, जो सरगुण रूप धराईआ। भगत कहे भगवान वड्डा, जो निरगुण हो के अंदर डेरा लाईआ। भगवान कहे मेरा भगत वड्डा, पंज तत्त काया करे कुड़माईआ। भगत कहे भगवान वड्डा, आत्म परमात्म जिस जोत जगाईआ। भगवान कहे मेरा भगत वड्डा, जो अनहद नादी राग सुणाईआ । भगत कहे भगवान वड्डा, विस्मादी विस्मादी रूप वटाईआ। भगवान कहे मेरा भगत वड्डा, मेरी कुल जगत चलाईआ। भगत कहे भगवान वड्डा, जिस अनमुल दात झोली पाईआ। भगवान कहे मेरा भगत वड्डा, जो लक्ख चुरासी जीव जंत जणाईआ। भगत कहे भगवान वड्डा, जिस दिती सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दोहां वेस सूरा सरबग्गा, नर नरेश आपणी खेल कराईआ।

भगत कहे भगवान नीका, नीचो नीच अखवाइंदा। भगवान कहे मेरा भगत नीका, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। भगत कहे भगवान नीका, घट घट डेरा लाइंदा। भगवान कहे भगत नीका, बण सेवक साची सेव कमाइंदा। भगत कहे भगवान नीका, निज घर आपणी ताड़ी लाइंदा। भगवान कहे भगत नीका, नित उडीकां राह तकाइंदा। निरगुण होए आपे मीता, मित्र प्यारा सांझ रखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा आप लगाइंदा ।

भगवान कहे भगत सेवा लग्ग, सेवा सच जणाईआ। भगत कहे भगवान प्रगट हो जग, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भगवान कहे भगत नगार वज, दो जहान कर शनवाईआ । भगत कहे भगवान साचे मन्दर सज, काया बंक इक्क सुहाईआ। भगवान कहे भगत कूड़ दवार तज, घर मिले माण वडयाईआ। भगत कहे भगवान औणा भज्ज, लोकमात पन्ध मुकाईआ । अन्तम दोहां इक्को नज़री आए हद्द, हदूद अरबा ना कोई वटाईआ। जिस गृह धरें पग, चरन कँवल टिकाईआ। सो मन्दर देणा दरस, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। होए मिलावा हस्स हस्स, नेत्र नैण ना नीर वहाईआ। खुल्हे इक्को तेरी अक्ख, दोए लोचण बन्द कराईआ। ढोला गावां तेरा जस, वेद पुरान ना सिफ्त सालाहीआ। तेरा नूर वेख प्रकाश, आकाश देण दुहाईआ । रव सस दासी दास, मण्डल मंडप सीस झुकाईआ। इक्को उपजे तेरी शाख़ भगत भगवान नज़री आईआ। साची कहणी आपे आख, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

भगवान कहे मेरा भगत नतीजा, लक्ख चुरासी फ़ेल कराईआ । भगत कहे मेरा भगवान

जीजा, घर मेरे आवे चाईं चाईंआ। भगवान कहे मेरा भगत किसे दा बणे ना फेर भतीजा, पिता इक्को इक्क अखवाईआ। भगत कहे भगवान मेरी करे रीझा, सिर मेरे हत्थ टिकाईआ। भगवान कहे जन भगत मैं तेरे मन्दर अंदर लंघा दहिलीज़ा, दूजे दर ना चरन छुहाईआ। भगत कहे मैं तेरे उत्ते पतीजा, दूसर सीस ना कदे झुकाईआ। भगवान कहे भगत मैं तेरे अग्गे होया नाचीज़ा, आपणा रक्खवां ना माण वडयाईआ। एका छत्तर झुलावां सीसा, जगदीस होवां सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाईआ।

भगत कहे भगवान संगी, सदा सदा सहाईआ। भगवान कहे मैं भगतां पूरी करां मंग मंगी, जो अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। भगत कहे भगवान परमानंदी, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। भगवान कहे मेरा भगत निर्मल चन्दी, चन्द चौधवीं नैण शरमाईआ। भगत कहे भगवान सदा बख्शंदी, बख्शणहार इक्क गोसाईंआ। भगवान कहे भगत मेरी लोकमात डण्डी, लक्ख चुरासी राह वखाईआ। भगत कहे भगवान मेरा आया उत्ते कन्ढी, कंडिआं वाड़ रिहा हटाईआ। भगवान कहे मेरी भगत वासना होए कदे ना रंडी, नर नरायण कन्त हंडाईआ। भगत कहे भगवान मेरी कट्टण आया फन्दी, बण पान्धी फेरा पाईआ। भगवान कहे भगत तेरी कुली लग्गी चंगी, चंगी तरां जणाईआ। साहिब सतिगुर गुरमुख प्यार वेखी इक्को झंगी, अंदर वड़िआ बेपरवाहीआ। गुरमुख गावण प्रेम प्रीती बन्दगी नज़री आए ना ख़ानाबन्दी, बन्दश होर ना कोई बणाईआ। सृष्ट सबाई नेत्र अन्धी, अक्ख सके ना कोई खुल्हाईआ। साढे तिन्न हत्थ वासना मंदी, मंद वासना भरी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत खेड़ा इक्क वसाईआ।

भगत कहे मेरा भगवान, भावी मेट मिटाइंदा। भगवान कहे मेरा भगत जवान, दो जहानां भय रखाइंदा। भगत कहे मेरा भगवान, सांवीं गंढु पवाइंदा। भगवान कहे मेरा भगत निशान, जगत निशाना मात झुलाइंदा। भगत कहे मेरा भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगवान भगतां आप समझाइंदा।

जन भगत आप समझावांगा। कल कूड़ी नींद खुल्हावांगा। निरगुण ईद चन्द चमकावांगा। हो बख्शंद, मेहर नज़र उठावांगा। ख़ाना तोड़ बन्दी बन्द, राह सच इक्क जणावांगा। लहणा चुके बत्ती दन्द, आत्म परमात्म जाप जपावांगा। ढोला सुहागी इक्को छन्द, शमा दीपक नाल जगावांगा। आत्म उपजे परमानंद, अनन्द अनन्द विच्चों वखावांगा। तन चोली चाढ़ रंग, रंग मजीठ दरसावांगा। अमृत धार वहा गंग, सुरती सुरसती विच्च नुहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत भेव चुकावांगा।

जन भगत भेव चुकावांगा। घट घट विच्च नज़री आवांगा। काया मट फोल फुलावांगा। रत्ती रत्त वेख वखावांगा। मन मत दूर करावांगा। गुरमत इक्क समझावांगा।

धीरज जत सति रखवावांगा। चरन कँवल नत बंधावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखावांगा।

कर किरपा वेखण आएगा। प्रभ निरगुण जोत जगाएगा। वेस अनेका रूप वटाएगा। कलिजुग जीव नज़र ना आएगा। पड़दा उहला इक्क रखाएगा। शब्द विचोला विच्च बणाएगा। साचा ढोला नाम सुणाएगा। आत्म मौला मौला रूप वटाएगा। उलटा कँवल नाभ जणाएगा। अमृत झिरना इक्क झिराएगा। किरन किरन मेघ बरसाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां घर फेरा पाएगा।

जन भगत दवारे आवेगा। श्री भगवान खेल रचावेगा। सन्त सुहेले आप उठावेगा। गुर चेले रंग रंगावेगा। सज्जण सुहेले अंग लगावेगा। जो प्रभ दे नाम तों वेहले, राए धर्म हत्थ फड़ावेगा। लक्ख चुरासी घल्ले जेले, फाँसी गल इक्क लटकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान इक्क तरावेगा।

भगत भगवान हरि तराएगा। फड़ बेड़ा पार कराएगा। शौह दरया ना कोई रुढ़ाएगा। बैतरनी रूप ना कोई वखाएगा। डूंघी भवर ना कोई वखाएगा। काया कवर ना कोई दबाएगा। जाबर जबर नज़र कोई ना आएगा। सबर प्याला इक्क पिआएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान वेख वखाएगा।

भगत भगवान वेख वखावेगा। फड़ बांहों गले लगावेगा। पाहन पाथर पार करावेगा। साचा साथी आप अखवावेगा। नाम राथन इक्क चढ़ावेगा। पूजा पाठन इक्क समझावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव महेश, महाशर इक्को नज़री आवेगा। वसणहारा साचे देस, आदेस इक्को इक्क उपजावेगा। आदि जुगादि रहे हमेश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत आप उठावेगा।

जन भगत सुहेला उठेगा। श्री भगवान सतिगुर तुठेगा। पिछला लहणा मुकेगा। पुरख अकाल गोदी चुकेगा। सिँघ शेर हो के बुकेगा। सच निशानउँ कदे ना उकेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे वेले नेड़े हो के ढुकेगा।

आपणा वेला आप सुहावेगा। गहर गम्भीर वेस वटावेगा। बिन सरीर कार कमावेगा। जन भगत तकदीर उठावेगा। तकसीर आपणे हत्थ रखावेगा। शरअ ज़ंजीर कटावेगा। दीन मज़्ब मिटावेगा। अरब खरब समझावेगा। तकसीम ज़रब ना कोई करावेगा। नुक्ता नून ना कोई रखावेगा। मीम मुख ना कोई भवावेगा। ऐन अक्ख ना कोई खुल्ह़ावेगा। हमज़ा रमज ना कोई लगावेगा। अलफ़ ये ना कोई पढ़ावेगा। बस्ता बे ना कोई बंन्ह़ावेगा। पे पुस्तक ना कोई पढ़ावेगा। ते तख़ता सर्ब उलटावेगा। से साबत रूप नज़री आवेगा। हे हुजरा हक़ जणावेगा। जीम जुगती आप बणावेगा। चे चर्चा घर घर आप सुणावेगा।

ख़े ख़रचा नाम बंधावेगा। पर्चा सभ दे अग्गे इक्को पावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर हल सवाल ना कोई करावेगा। सारे कहण तेरा अडंबर, तुध बिन रचन ना कोई रचावेगा। भगत भगवान रचा स्वम्बर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेखण सर्ब आवेगा।

भगवान स्वम्बर रचाएगा। गुर अवतार वेखण आएगा। पीर पैगम्बर शुकर मनाएगा। पिता पुत्तर आप विआहेगा। सिर सेहरा सीस बंधाएगा। चेरा इक्को नज़री आएगा। घेरा गुर अवतार रखाएगा। डेरा सचखण्ड जणाएगा। वेहड़ा खुल्ला आप बणाएगा। झेड़ा तूं मैं चुकाएगा। कर मेहरां वक्त सुहाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगतां देवे इक्क ज्ञान, ज्ञान भगत भगवान निशान, भगवान भगत जगत विधान, विद्त आपणे नाम करे पढ़ाईआ। (१४ जेठ २०२० बिक्रमी बेलू राम)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत कहण प्रभ आ जा नेड़े, दूर नज़र किसे ना आईआ। जुग जुग वेखे तेरे झेड़े, झिड़कां देवे सर्ब लोकाईआ। कर किरपा वसा साचे खेड़े, गृह मन्दर होए रुशनाईआ। कलिजुग असीं हुण हो गए तेरे, तूं क्यों बैठा मुख छुपाईआ। खुल्ले रक्खे असां वेहड़े, बन्द ताक ना कोई रखाईआ। तूं जाणे केहड़े केहड़े, जिन्नां तेरी आस रखाईआ। मेहरवान हो के बन्न्ह बेड़े, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। कलिजुग लवे ना आपणे घेरे, घेरा अवर ना कोई पाईआ। तेरे हत्थ साडे नबेड़े, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणी इक्क सरनाईआ।

मैं नबेड़ा हक़ करावांगा। अनथक सेव कमावांगा। नट्ठ नट्ठ पन्ध मुकावांगा। झट्ट गुरमुखां घर आवांगा। नाम सट्ट इक्क लगावांगा। दुरमत मैल कट्ट, निर्मल नूर उपजावांगा। वेले अन्त रक्ख पत, पतिपरमेशवर रूप धरावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठावांगा।

हरिजन साचे आप उठावांगा। घर घर फेरा पावांगा। दर दर अलख जगावांगा। हरख सोग सर्ब मिटावांगा। हउमे रोग सर्ब चुकावांगा। साचा जोग इक्क सिखावांगा। नाम सलोक इक्क गावांगा। लोक परलोक वेख वखावांगा। काया कोट पड़दा लाहवांगा। नाम चोट इक्क लगावांगा। निर्मल जोत इक्क जगावांगा। हरख़ सोग सभ चुकावांगा। दरस अमोघ आप वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले पार लंघावांगा।

सन्त सुहेले पार लंघावांगा। हो मेहरवान दया कमावांगा। नेरन नेरा वेस वटावांगा। तेरा मेरा लेख चुकावांगा। चाउँ घनेरा इक्क वखावांगा। गुरमुखां अंदर डेरा लावांगा। साचा मन्दर इक्क सुहावांगा। आत्म सेजा सोभा पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग इक्क रंगावांगा।

आपणा रंग नाम रंगावांगा। गीत इक्को इक्क सुणावांगा। भगत रीत जगत चलावांगा। सतिजुग साचे कर सरजीत, साचा जन्म दवावांगा। चार वरन इक्क प्रीत, प्रीतीवान इक्क अखवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भेव चुकावांगा।

जन भगतां भेव चुकावांगा। निरगुण हो के दरस वखावांगा। सरगुण आपणे नाल मिलावांगा। नाद धुन इक्क उपजावांगा। मुन सुन आप खुल्हावांगा। गुरमुख जन गोद बहावांगा। मेरा खेल मंतर फुन, घड़ी पल ना कोई लगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दर आप बहावांगा।

साचे मन्दर बहावांगा। वज्जा जंदर तोड़ तुड़ावांगा। उजड़या खेड़ा फेर वसावांगा। निर्मल नूर जोत जगावांगा। राग तूर नाद वजावांगा। ज़ाहर ज़हूर नज़री आवांगा। बण मशकूर शुकर मनावांगा। जन भगतां मिलां ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर करावांगा। कलिजुग अन्त ना होवां मफ़रूर, लुक लुक ना वक्त लंघावांगा। सद वसां हाज़र हज़ूर, हाज़री आपणी घर घर उत्ते गुरमुखां हिरदे आप लिखावांगा। जे कोई वछोड़े विच्च होया कसूर, कसूर दी मुआफ़ी मंग मंगावांगा। एह मेरा दस्तूर, जो मैनूं भुल्ले मैं ओनूं ना कदे भुलावांगा। जो मेरा होया मैं उहदा होया ज़रूर, ज़रा ज़रा आपणी खेल वखावांगा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां अग्गे मेरा चले ना कोई ग़रूर, नीवां हो के सभ दी सेव कमावांगा। एसे कारन आदि जुगादि सदा मशहूर, मुशकल सभ दी हल्ल करावांगा। आसा मनसा मनसा पूर, माया मोह तुड़ावांगा। सर्ब कला आपे भरपूर, गुरमुख नाम भरपूर वखावांगा। कलिजुग अन्त ना होवां दूर, नेड़े हो के दर दर घर घर आपणा दरस वखावांगा। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, निरगुण जोती नूर, पंज तत्त भगत बंक वड्डिआवांगा।

(२८ जेठ २०२० बि अदालत सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

. . . . . जन भगत तेरी करां भाल, भालां सर्ब लोकाईआ। निरगुण हो के बण दलाल, साची सेव कमाईआ। जलवा नूरी दे जलाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। साचा अमल दस्स करावां आअमाल, उलमा बण के करां हक़ पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी पूरा कर सवाल, फिकरा इक्को नाम प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि भगतां भेव चुकाईआ।

हरि भगत कहे मैं तेरा मीत, प्रभ तेरी सरन रखाईआ। श्री भगवान कहे मैं तेरा गुर अतीत, त्रैगुण विच्च कदे ना आईआ। भगत कहे मैं लभ्भण ना जावां मन्दर मसीत, शिवदवाले मड्ड ना फेरा पाईआ। सतिगुर कहे मैं तेरे घर आवां ठीक, दो जहानां बण के पान्धी राहीआ। गुरसिख कहे मैं बिन तेरे करां ना कोई प्रीत, नाता तोड़ां सर्ब लोकाईआ। श्री भगवान कहे मैं तेरी चिट्टे उत्ते पावां इक्क लीक, जुग चौकड़ी सके ना कोई मिटाईआ। भगत कहे प्रभ मैं वेखवां तेरी रीत, रीतीवान तेरी ओट तकाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत मैं पहलों तेरा गावां गीत, खुशीआं ढोला इक्क सुणाईआ। भगत कहे प्रभ तेरे अग्गे मेरा सीस, तत्त तेरी भेट चढ़ाईआ। भगवान कहे मैं सच जगदीस, नाता तेरे नाल रखाईआ। भगत भगवान दोवें मिल के बणया दूआ दूइउँ सिफ़र दूआ सिफ़रा मिल के होए बीस, बीस बीस रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जन भगत देवे वडयाईआ।

जन भगत कहे प्रभ मेरा वड्डा, उच्च अगम्म अथाह अखवाइंदा। श्री भगवान कहे भगत मेरा बच्चा नढ्ढा, जिस बिन मेरा लोकमात राह ना कोई चलाइंदा। भगत कहे मेरा पिता पुरख अकाल सचा, सच कहाणी इक्क सुणाइंदा। श्री भगवान कहे मैं भगतां लूं लूं अंदर रचा, बिन भगतां मैनूं अंदर वड़न दी जाच ना कोई सिखाइंदा। भगत कहे प्रभ मैं तेरा बच्चा, बचपन तेरी झोली पाइंदा। श्री भगवान कहे पुत हच्छा, हच्छी तरा आप समझाइंदा। दोहां दा मिल के बणया सोहँ सचा, सति सरूप रूप वटाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जिस बोलिआ पुरख समरथ्था, सो समरथ दया कमाइंदा। कोट जन्म दी लेखे लग्गे पूजा पाठा, जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहार साचा मीत, भगत भगवान दस्से रीत, मेल मिलाए बिन मन्दर मसीत, जिउँ कच्चे कोठे प्रभू परमात्मा मिल्या गुरमीत, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ। (२६ अस्सू २०२० बि गुरमीत सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत कहे प्रभ तेरा सहारा, सच तेरी सरनाईआ। तुध बिन करे ना कोई प्यारा, जगत नाता कूड़ नज़री आईआ। सच दिसे ना कोई किनारा, नईया नौका पार ना कोई लंघाईआ। जगत वासना जगत अखाड़ा, कूड़ी क्रिया नाच नचाईआ। घर घर चोर पंचम धाड़ा, दिवस रैण लुट्टण वाहो दाहीआ। भरम भुलाए पुरख नारा, नार पुरख समझ कोई ना आईआ। तेरा मंगे ना कोई दरस दीदारा, जगत प्यार पुत्तर धी रखाईआ। जिस किरपा कर जन्म दिता संसारा, तिस सतिगुर बैठे सर्ब आपणा मुख भुआईआ। जन भगत इक्को मंगे तेरा दुआरा, दूजी आस ना कोई रखाईआ। तूं साहिब ठाकर मेलणहारा, मेहरवान बेपरवाहीआ। अंदर बाहर सांझा यारा, सगला संग निभाईआ। कलिजुग वेख धूआंधारा, तेरे चरन मंगी सरनाईआ। हाव भाव दा इक्क नज़ारा, हरिमन्दर दे वखाईआ। जिस घर दीवा बाती

जगे नयारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अमृत मिले ठंडा ठारा, सांतक सति कराईआ। शब्द अगम्मी दए हुलारा, सच झकोला इक्क जणाईआ। तेरे चरन कँवल सद बलिहारा, बलिहारी गुर गोसाईंआ । तेरा मेरा मेरा तेरा इक्को रूप अपारा, सति सरूप नज़री आईआ। जिस वेले गावां तेरा नाअरा, अन्तर आत्म धुन उपजाईआ। ओसे वेले तूं कहें तूं मेरा मैं तेरा प्यारा, सोहँ धार इक्क जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरा अन्त ना पारावारा, जिस अन्तश्करन अन्तरगत दिता बदलाईआ।

सुण भगत एह तेरी वड्डिआई, प्रभ सेवक रूप वटाईआ। जन्म कर्म दा लहणा रिहा चुकाई, वस्त पिछली पराई झोली पाईआ। तेरे प्यार अंदर झल्ली ना जाए जुदाई, दूर दुराडा आवे माहीआ। अंदर वड़ के वजाए वधाई, वाहद आपणा राग सुणाईआ। खुशी होवे बेपरवाही, परदा हरिजन आप उठाईआ। अंदर वड़ के पौड़े चढ़ के दर खड़ के मुख वेखे चाईं चाईं, नूर नुराना इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि भगत तेरा मन्दर इक्क सुहाईआ।

भगत कहे प्रभ मन्दर तेरा, मेरे विच्च ना कोई चतुराईआ। मैं वेखां ते घुप्प अन्धेरा, तूं वेखें नूर नज़री आईआ। तेरी किरपा मेरा बज्झे बेड़ा, मेरी आसा तेरी सरनाईआ। धन्न भाग मेरा वसाएं खेड़ा, कक्खां कुली सोभा पाईआ। तेरे अग्गे बेनन्ती नहीं कोई झेड़ा, झगड़ा नज़र कोई ना आईआ। तेरा प्यार इक्को मेरा, मेरा प्यार तेरे विच्च समाईआ। बेपरवाह शहनशाह तेरा वड जेरा, जुग चौकड़ी झल्लदा रहें जुदाईआ। कर किरपा जिस इक्क वार लिआएं आपणे नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। सो गुरमुख कहे मैं आया विच्च घेरा, चार कुण्ट राह नज़र कोई ना आईआ। पहरेदार बणया मेरा सिँघ शेरा, शहनशाह हो के चाकर रूप वखाईआ। जन्म कर्म दा चुकावे फेरा, फेरा कूड़ी क्रिया गुंझल दए कढ्ढाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान कर साची मेहरा, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ।

सुण भगत की करां, करता पुरख जणाईआ। तेरे कोलो सदा डरां, डर के तेरी सेव इक्क कमाईआ। पहलों आपणा आप हरां, हरिजन देवां फेर वडयाईआ। जन भगतां पिच्छेआप मरां, मर के भगतां जीवण दिआं बणाईआ। निरगुण हो के अंदर वड़ां, सरगुण महल्ल सोभा पाईआ। सूरबीर हो के उप्पर चढ़ां, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। प्रेम प्यार अंदर साचा ढोला पढ़ां, गुरमुख तेरा जस सुणाईआ। जे रुठें अग्गों हो के फड़ां, पिच्छा मुख ना कदे भवाईआ। लेख चुका नौं दरां, दर दसवें खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिखिआ इक्क समझाईआ।

भगत कहे सुण भगवान, मैं सच सच जणाईआ। तूं पिता पुरख बलवान, की तेरी वडयाईआ । जे बालां मिलें आण, तेरा अहिसान कोई नज़र ना आईआ। तेरा खेल सदा मेहरवान, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ । फड़ गोदी चुकें आण, कोझे कमले लएं उठाईआ।

प्रेम प्रीती अंदर आपणा देवें ज्ञान, साची रीती इक्क समझाईआ। धर्म दुआर वखा निशान, सति सतिवादी इक्क झुलाईआ। जन भगतां नाल मिल के बणें भगवान, भगवान भगत रूप वटाईआ। इक्क दो इक्क निशान, सोहँ रूप अनूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेल करे साचा हरि, आपणी खेल आपणे विच्चों प्रगटाईआ। (२७ अस्सू २०२० बिक्रमी बीबी चरन कौर)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगवान कहे मैं भगतां वस, आपणा बल ना कोई रखाईआ। भगत कहे प्रभ तेरा रस, सांतक सति सरूप नज़री आईआ। निरगुण निरगुण खेल करे समरथ, बेपरवाह वड्डी वडयाईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा दए समझाईआ। वस्त अमोलक देवे हत्थ, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। कर वसेरा घट घट, नूर जोत कर रुशनाईआ। जन भगतां शब्द डोरी पा नॅथ, तन्दी डोर आपणे हत्थ रखाईआ। नाम धुन बोल अलक्ख, अलक्ख निरँजण भेव चुकाईआ।

निरगुण नूर कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जन भगत कहे मेरा लेखे लग्गे स्वास, इक्क तेरा नाम धिआईआ। जुग जन्म दी पूरी करनी आस, जगत तृस्ना मेट मिटाईआ। रल मिल करीए बचन बलास, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। काया चोला पहन लबास, पंज तत्त बंक दुआर सुहाईआ। जिस अंदर खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल रूप नज़री आईआ। किरपा कर सर्ब गुणतास, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। साचा नूर कर प्रकाश, आप आपणा दे बुझाईआ। मेरे नाल मिल आ पा रास, गोपी काहन रूप धराईआ। सज्जण हो के गा गाथ, साचा ढोला राग अलाईआ। निरगुण निरगुण आवे इक्क आवाज़, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। कर खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। जन भगत रहे सद तेरे पास, जगत नाता ना कोई जणाईआ। सिमरन जाणे पूजा पाठ, इष्ट गुरदेव तू ही इक्क नज़री आईआ। तेरे नालों विछड़ी मिले तेरी ज़ात, अजाति रूप ना कोई रखाईआ। तूं ही पिता तूं ही मात, हउँ बालक मांगों इक्क सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरि जू तेरे चरन मिले सरनाईआ।

जन भगतां देवे सच भरवास, भरवासा इक्को इक्क जणाइंदा। वेख वखा दूर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच्च प्रभात, डूंघी कंदर फोल फोलाइंदा। लेखे ला पवण सवास, रसना जिह्वा कीमत पाइंदा। बण सहाई अनाथां नाथ, दीन दयाल दीनन आपणे गले लगाइंदा। जुग चौकड़ी पुच्छणहारा वात, कलिजुग अन्तम फेरा पाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चमकाइंदा। जन भगत दुआरे होए दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। रातीं सुत्तयां जाए आख, बिन रसना जिह्वा कूक बुलाइंदा। गुरमुख

उठ वेख खोल्ह ताक, बन्द कवाड़ी कुण्डा लाहिंदा। सति सरूप नज़री दिसे साथ, नदर निहाली दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा।

भगत कहे सुण मेरे भूप, भूपत तेरी वडयाईआ। नित वेखां चारे कूट, दहि दिशा नज़री आईआ। तेरा मेरा ताणां पेटा सूत, सूत्रधारी तेरी शरनाईआ। आप बणा सच सपूत, कपूत रूप ना कोई वखाईआ। मैनूं तेरे मिलण दी भूख, दूजी तृस्न ना कोई रखवाईआ। घर आ के देवें सुख, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। जरम कर्म दा मेटें दुःख, लक्ख चुरासी पन्ध मुकाईआ। आपणी गोदी लएं चुक्क, पिता पूत देणी वडयाईआ। मेरा उजल कर मुख, अमृत सीर इक्क चवाईआ। दरस दे क्यों बैठा लुक, पड़दा आपणा दे उठाईआ। मेहरवान हो के तुठ, मेहर नज़र नैण अक्ख खुल्हाईआ। अमृत जाम दे घुट्ट, निझर झिरना रस चवाईआ । होए प्रकाश साची जोत, अन्ध अन्धेर रहण ना पाईआ। तेरे नालों विछड़ी तैनूं मिले जोत, अन्त प्रभ तेरे विच्च समाईआ। सदा वसीए तेरे सचखण्ड दुआरे कोट, अवण गवण फेरा कोई रहण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साडी मनसा पूरी कर लोच, लोचण नेत्र नैण सद तेरा दरसन पाईआ।

भगत जन तेरा सदा दरस, हरि दरसी आप जणाइंदा। किरपानिधान करे तरस, ठाकर सुआमी दया कमाइंदा। परवरदिगार मेटे हरस, हवस होर ना कोई रखवाइंदा। इक्को राग सुणाए ताल तर्ज़, नाद धुन इक्क उपजाइंदा । जन्म मरन दी मेटे हरस, मुरदा रूप ना कोई वखाइंदा। करे खेल आप असचरज, अचरज लीला आप रचाइंदा। प्रगट हो मरदाना मरद, सच मरदानगी आप कमाइंदा। जन भगतां वंडे दर्द, दर्द दुःख भय भंजन आपणा नाउँ धराइंदा। सभ दा लेखा पूरब वेखे खोल्ह फ़रद, फ़रद ज़ुलम सभ दे उप्पर लगाइंदा। जो जन सच दुआर हरि निरँकार अग्गे दोए जोड़ करन अर्ज़, तिन्हां आरज़ू कर मनज़ूर झोली पाइंदा । निरगुण सरगुण मिल के भगत भगवान दोहां पूरा होवे फ़र्ज़, दूर नेड़े फ़ासला विच्च कोई ना पाइंदा। जन भगतां होण ना देवे कदी हर्ज, हर्जाना आपणे खाते विच्चों पूरा कराइंदा । किसे कोलों लैण ना देवे करज़, घरों भंडारा नाम वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भगत भगवान जगत निशान दो जहान मेहरवान रूप वखाइंदा।

(२७ अस्सू २०२० बिक्रमी मनसा सिंघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन भगत कहे मैं आराधिआ इक्क, एकंकार ध्यान लगाईआ। जिस आपणा लेखा मेरे अन्तर दिता लिख, कागज़ कलम छाही संग ना कोई रखवाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण उहो रूप आए दिस, सति सरूप नज़री आईआ। आत्म परमात्म करे

साचा हित, प्रीती इक्को इक्क वरवाईआ। जन्म कर्म भरम भौ कूड़ी क्रिया लेखा लए नजिठ, वड दाता आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत जो सुत्ता दे कर पिठ, गुरमुखां सन्मुख नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत रिहा तराईआ ।

जन भगत कहे प्रभ तेरी साची मस्ती, नाम खुमारी इक्को नज़री आईआ। सदा सदा सद नजरी आए तेरी हस्ती, घट घट आपणा डेरा लाईआ। आदि जुगादि चढ़ी रहे मस्ती, सच मतवाला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी इक्क वडयाईआ।

जन भगत कहे प्रभ तेरा नगारा, घर नव निध वज्जे वधाईआ। नाता छुट्टे सर्ब संसारा, सगली चिन्त गवाईआ। निज नेत्र नैण दीदारा, दरस हरस सर्ब गवाईआ। गृह दीपक जोत उजिआरा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। सति मिलण दा सच प्यारा, प्रीतम प्रीती इक्क दृढ़ाईआ। मन्दर सुहाए महल्ल मनारा, निहचल नाउँ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवणहार आप अखवाईआ।

जन भगत कहे की तेरी सिफ्त, सच सालाही कहण कुछ ना पाईआ। कोई ना जाणे तेरी निस्बत, आदि जुगादि जुग चौकड़ी समझ ना कोई रखवाईआ। तेरा लेखा सदा सदा इलब, लोक परलोक तेरा नूर नजरी आईआ। सच स्वामी जन भगतां करे इक्क मुहब्बत, मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवे हर घट, गृह गृह झोली पाईआ।

हरी भगत कहे मेरे भगवन्त, तेरी भगती समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी कर कर थक्के साध सन्त, जीव जंत भज्जण वाहो दाहीआ। किसे हत्थ ना आवे मणीआ मंत, मंतर सति ना कोई समझाईआ। रूप अनूप तेरे वेख अनन्त, अगणत सके ना कोई गणाईआ । भरमे भुल्ला जगत संसार कुकरमी जंत, नेहकरमी तेरा नेहों ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिखिआ दिती दृढ़ाईआ।

श्री भगवान भेव खोल्ह, जन भगत दए समझाईआ। जुग चौकड़ी तोलां साचा तोल, नाम तराज़ू हत्थ उठाईआ। साचे सन्तां सज्जण बण के वसां कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। अंदर वड़ वजावां ढोल, सुत्तयां आप उठाईआ। अमृत रस पिआवां पौहल, जाम नाम हत्थ उठाईआ । उलटा कर के नाभ कौल, झिरना इक्को सति झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद होवे आप सहाईआ।

जन भगत कहे तेरा अमृत पीवे कौण, समझ विच्च किसे ना आईआ। साध सन्त चार कुण्ट दह दिशा भौण, दिवस रैण मन वासना नाल रलाईआ। तीर्थ तट्ट किनार जो

जा जा नहौण, दुरमत मैल ना कोई धवाईआ। मृगशाला जो सेजे सौण, धूढ़ी तन तपाईआ। सीस भस्म जो फड़ फड़ पौण, ख़ाकी ख़ाक रूप वटाईआ। रागाँ नादां अंदर जो गाण, ताल तलवाड़े जो रहे वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा संग सके ना कोई निभाईआ।

पारब्रह्म कहे मेरा लेखा सच, सति सति समझाईआ। जन भगतां मिलां हस्स हस्स, नित नवित्त फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी देवां वथ्थ, नाम अमोलक इक्क वरताईआ। हिरदे अंदर आपे वस, हस्ती आपणे नाल रखाईआ। अमृत आत्म साचा झट्ट, सच सरोवर दिआं भराईआ । सति धर्म दा खोल्ह के हट्ट, नाम वणजारा वंड वंडाईआ। आत्म सेजा बैठ सुहञ्जणी खाट, सिँघासण इक्को रंग रंगाईआ। भाग लगा काया माट, काची माटी दिआं वडयाईआ । सदा सुहेला बण के वसां साथ, सगला संग निभाईआ। जिन्हां सुणावां आपणी गाथ, सोहँ ढोला इक्क पढ़ाईआ। तिन्हां एथे ओथे बणां माई बाप, पिता पुरख अकाल अखवाईआ। पकड़ चढ़ावां साचे राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपणे मिलण दी अन्तर आपे दस्सां जाच, सुरती शब्द जोड़ जुड़ाईआ। साची सेजा कर के भोग बलास, नारी कन्त रूप वटाईआ। जन्म जन्म दी पूरी आस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे संग रखाईआ।

जन भगत कहे की तेरा रंग, जग नेत्र नज़र नहीं आइंदा। कवण सेजा सोहे पलघँ, सच सिँघासण कवण डेरा लाइंदा। कवण नाम वज्जे मरदंग, कवण नाद अलाइंदा । कवण प्रेम दए अनन्द, कवण आपणा संग वखाइंदा। कवण ढोला गाए छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर भिखक मंग मंगाइंदा।

मेरा ढोला सोहँ सो, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां आप जणाईआ। सृष्ट सबाई नालों करे निर्मोह, मुहब्बत आपणे नाल जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया लवे खोह, सच सुच झोली दए भराईआ। कर प्रकाश अन्तर लो, अन्ध अन्धेर गवाईआ। धुर दा ढोआ देवे ढो, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए उठाईआ।

जन भगत कहे की तेरा गीत, मेरी समझ विच्च ना आईआ । मैं सुण सुण थक्का मन्दर मसीत, शिवदवाले मठ्ठ दर दर फेरा पाईआ। तेरी कोई ना जाणे अचरज रीत, रीतीवान पड़दा ना कोई उठाईआ। सारे कहण प्रभ दा खेल सदा अनडीठ, वेखण विच्च कदे ना आईआ । जो जन करे चरन प्रीत, तिस देवे माण वडयाईआ। कर किरपा स्वामी बख्शे इक्क हदीस, हज़रत सच कर पढ़ाईआ। हउँ बाल इयाणा नीकन नीक, नीचों नीच रिहा वखाईआ। काया चोली चाढ़ रंग मजीठ, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। मेरी नंगी ना होवे पीठ, पुशत पनाह तेरा हत्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन तेरी तकाईआ।

श्री भगवान कहे जन भगत सरन लैणी तक्क, ओट इक्को इक्क रखाईआ। सभ दी झोली पावां हक़, हकीकत विच्चों खोज खुजाईआ। झूठी प्रीत ला ना जाणा नस्स, भज्जयां मार्ग हत्थ ना कोई आईआ । किरपा करे पुरख समरथ, दो जहान दए वडयाईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख, घर दरस सैहज सुभाईआ। तूं मेरा मैं तेरा मिल के गौंदे एहो जस, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, वड्डा छोटा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा नूर आपणा नूर दरसाईआ।

जन भगत कहे वड्डा छोटा एह तेरा कम्म, मेरी समझ विच्च ना आईआ। तेरी वड्डिआई तूं हैं प्रभू धन्न, धन्न तेरी शरनाईआ । मैं बाला नढ्ढा नूरी तेरा चन्न, तूं चांदना बेपरवाहीआ । मैं नित नवित्त तेरा भाणा रिहा मन्न, तूं सद आपणे भाणे विच्च समाईआ। मेरा वसेरा छप्परी छन्न, तेरा महल्ल अटल सचखण्ड साचा सोभा पाईआ । तूं मेरा जननी जन, हउँ पूत सपूत दर ठांडा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देणी माण वडयाईआ ।

तूं पूत सपूत मेरा जग, श्री भगवान सच समझाइंदा। मैं वसां उप्पर शाह रग, घर साचे डेरा लाइंदा। तेरा गुरमुख कर के हज्ज, आपणी हाजत पूर कराइंदा। जगत दवार सारे तज, तख़त तेरा इक्क वडिआइंदा । मैं दरसन करां रज्ज, नित लोचण तेरे नाल मिलाइंदा । तेरे अंदर आपणा परदा कज, पंज तत्त काया ओढ्ढण इक्क सुहाइंदा। तुध बिन मेरा देवे ना कोई साथ, संगी संग ना कोई जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हत्थ रखाइंदा।

भगत कहे तूं मेरा बाप, पिता इक्को इक्क अखवाईआ। बिन रसना जिह्वा करां जाप, बिन पड़्हिआं होवे पढ़ाईआ। निज नेत्र वेखां तेरा परताप, अगम्म अथाह तेरा नूर नज़री आईआ। संसा रोग ना कोई सन्ताप, चिन्ता दुःख ना कोई जणाईआ। धन्न वड्डिआई जागे मेरे भाग, पूरब लहणा झोली पाईआ। नाम अमोलक दिती दात, वस्त आपणी आप वरताईआ । चरन प्रीता बध्धा नात, बिधाता आपणा संग वखाईआ। तूं बैठा रहें इकांत, मैं वेखां चाईं चाईंआ। बिन तेरी किरपा तेरी समझ आए किसे ना बात, सोच सके कोई ना राईआ। जिन्हां बख्शें आप नजात, समरथ पुरख हो सहाईआ। तिन्हां गुरमुखां पूरी होवे आस, आस असल नाल मिलाईआ। कोटन कोट कोटां विच्चों हरिजन विरले नाल करें मिलाप, घर मेला सैहज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत बणाएं सज्जण साक, नाता सगला जगत तुड़ाईआ। महारज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणा रक्ख डूंघा खात, जुग चौकड़ी खाते आपणे विच्च समाईआ। (२५ चेत २०२१ बिक्रमी सतवन्त कौर)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जन भगत कहे मेरा इष्ट भगवान, दूजा देव ना कोई मनाईआ। जो अन्तर आत्म देवे सच ज्ञान, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। निर्मल दीआ जोत जगाए महान, तेल बाती ना कोई रखवाईआ। अमृत रस पिआए जाम, निझर झिरना इक्क झिराईआ। कूड़ी क्रिया मेटे शैतान, ममता मोह ना कोई हलकाईआ । सच मन्दर सुहाए मकान, घर घर विच्च सोभा पाईआ। स्वच्छ सरूपी दरसन देवे आण, सति स्वामी नज़री आईआ। धुर दा शब्द सुणाए नाद धुनकान, अनहद रागी राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर देवे माण वडयाईआ।

श्री भगवान कहे मेरा भगत प्यार, लक्ख चुरासी समझ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी पावां सार, नित नवित्त वेख वखाईआ। साची सिखिआ इक्क सिखाल, धुर दा नाम करां पढ़ाईआ । दीना बंधप हो के दीन दयाल, दर घर साचा वेख वखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ।

जन भगत कहे मेरा भगवन्त, बिन भगवन दूजा नज़र कोई ना आईआ। आत्म परमात्म सति सतिवादी धुर दा कन्त, नर हरि नरायण इक्को इक्क अखवाईआ। जुग चौकड़ी लक्ख चुरासी जीव जंत बणाए बणत, साध सन्त दए समझाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद महिमा सुणाए अगणत, खाणी बाणी आपणा राग अलाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता गढ़ तोड़े हउमे हंगत, सच सुच्च इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एथे ओथे होए सहाईआ।

श्री भगवान कहे मेरा भगत सज्जण, दो जहानां विच्चों इक्को नज़री आइंदा। चरन धूढ़ी करे सच्चा मज्जन, सच सरोवर इक्को नहा नहा खुशी रखवाइंदा। दिवस रैण अठ्ठे पहर रहे मग्न, अन्तर आत्म सच ध्यान लगाइंदा। अंदर वड़ के काया पौड़े चढ़ के सच दवारिउँ मैनूं आवे सद्दण, उच्ची कूक कूक साचा नाम अलाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां संग समाइंदा।

जन भगत कहे मेरा ठाकर स्वामी, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। लक्ख चुरासी घट घट होए अन्तरजामी, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। शब्दी शब्द जो गाए अगम्मी बाणी, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ। सन्त सुहेला गुरू गुर चेला भेव खुल्हाए पद निरबाणी, घर साचा इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

श्री भगवन्त कहे मेरा भगत संग, साथी दो जहान नज़री आइंदा। जिस अंदर मैनूं मिले अनन्द, घर विच्च घर बहि खुशी मनाइंदा। आपणा नूरी जोत चाढ़ चन्द, साचा नूर इक्क रुशनाइंदा । सतिवादी गा छन्द, सोहला ढोला राग अलाइंदा। आसा मनसा मेरी पूरी करे मंग, हरिजन आपणा आप भेट चढ़ाइंदा। जिस मिलिआं सदा सद पए ठंड,

सो भगत साहिब सतिगुर सच्चे भाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख खुशी मनाइंदा।

जन भगत कहे मेरा भगवान अगम्म, अलख अगोचर वड वडयाईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गरभ ना फेरा पाईआ। हरख़ सोग ना कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोई जलाईआ। पवण स्वास ना कोई दम, नेत्र नीर ना कोई वहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ दो जहान जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी साचा कर्म कमाईआ। लक्ख चुरासी जीव जंत आपे घड़े लए भन्न, घड़न भन्नणहार खेल खलाईआ। वस्त अमोलक नाम निधान देवे धन, घट घट अंदर झोली आप भराईआ। रव सस चमकावणहारा चन्न, चाननी आपणी धार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि भगत निउँ निउँ लागे पाईंआ।

श्री भगवान कहे भगत अपार, लक्ख चुरासी विच्चों नज़री आईआ। जो नित नवित्त मंगे इक्क दीदार, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। नाता तोड़ कूड़ संसार, इष्ट इक्को इक्क मनाईआ। दृष्ट खोल्ह आप करतार, घर वेखे चाईं चाईंआ। मेल मिलावा ठांडे दरबार, महल्ल अटल मिले वडयाईआ। साची सखीआं मंगलचार, गीत गोबिन्द इक्क सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा यार, मित्र प्यारा बणे बेपरवाहीआ। आवण जावण जन्म मरन दा गेड़ निवार, लक्ख चुरासी दए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन होवे आप सहाईआ।

जन भगत कहे श्री भगवान मेरा मित्र, मातर भूमी दए वडयाईआ। जोती धारों जोत आए निकल, शब्दी शब्द नाद वजाईआ। ना मुलम्मां ना पित्तल, सच सवरन पारस रूप वखाईआ। एका धार रहे बिस्मिल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वडयाईआ।

श्री भगवान कहे मेरा भगत अनोखा, कोटां विच्चों नज़री आईआ। जिस अंदर निरगुण नूर जगे जोता, अज्ञान अन्धेर बैठा मुख छुपाईआ। सो साहिब सुलतान नाम जपे सौखा, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। चरन प्रीती रक्खे धुर दी ओटा, सीस उप्पर ना कोई उठाईआ। मन वासना मन ना होए खोटा, कूड़ी क्रिया दए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा मेल मिलाईआ।

जन भगत कहे मेरा भगवान वचोला, मेला आपणा आपे आप कराईआ। श्री भगवान कहे मैं भगतां गोला, जुग जुग सेव कमाईआ। भगत कहे मैं गावां ढोला, निरगुण तेरा नाम धिआईआ। भगवान कहे मैं भगतां अंदर मौला, सरगुण आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सच्चा शहनशाहीआ।

भगत भगवान इक्को रंग, दूजी वंड ना कोई वंडाईआ। इक्को सेज इक्क पलंघ, इक्को सिँघासण सोभा पाईआ। इक्को प्रेम इक्क अनन्द, रस इक्को इक्क रखाईआ। इक्को गीत इक्को छन्द, ढोला इक्को इक्क सुणाईआ। इक्को मंज़ल इक्को पन्ध, पान्धी इक्को रूप वटाईआ। इक्को तुट्टी देवे गंढ, गंढणहार इक्क हो जाईआ। इक्को सच दवार जाए लंघ, इक्को एक एकंकार नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान मेल मिलाईआ ।

भगत भगवान होए मिलाप, मिलणी हरि जगदीस कराइंदा । दोवें मिल के इक्क दूजे दा करन जाप, प्रेम प्रीती अंदर साचा नाद वजाइंदा। नाता जुड़ाए पिता पूत बाप, पुरख अकाल खेल खलाइंदा। आत्म परमात्म बण सज्जण साक, सगला संग निभाइंदा । पारब्रह्म ब्रह्म वेखे मार झात, परदा उहला आप उठाइंदा। सच दवारे सच प्रीती साचा बन्ने नात, एथे ओथे दो जहान ना कोई तुड़ाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान सोहण इक्को घाट, पत्तण साहिब सतिगुर इक्क वखाइंदा।

भगत भगवान सच महल्ला, सति सतिवादी इक्क वसाईआ। इक्क दूजे दा फड़िआ पल्ला, पल्लू सके ना कोई छुडाईआ। जोती शब्दी धार रला, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। जरम कर्म दा मेट सल्ला, आवण जावण डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान इक्को घर वसाईआ।

भगत भगवान घर वसे एक, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। सच दवारे मिले टेक, सति सतिवादी होए सहाईआ। अगला पिछला चुक्के लेख, कलम शाही कागज़ दए गवाहीआ। निरगुण आत्म निरगुण परमात्म दोहां बणया हेत, हितकारी आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां संग जुग जुग खेडे खेड, बण खलारी आपणा खेल रचाईआ । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां दस्से आत्म अन्तर आपणा भेत, अनभव प्रकाश पुरख अबिनाश इक्को वार कराईआ।

(२५ चेत २०२१ बिक्रमी बीबी भगवन्ती)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत भगवान दा इक्को भोजन, भजन बन्दगी सच वडयाईआ। जिसनूं नानक मिल्या चढ़ के उप्पर कोटन योजन, जुज़ आपणा ओसे विच्च मिलाईआ। नाम संदेशा लै के आया अगाध बोधन, भेव अभेदा अगम्म खुल्हाईआ। सो भगतां देवण आया साची मौजण, मौजूदा हो के होया सहाईआ। जन्म जन्म दा कट्टे रोगण, चिन्ता ग़म रिहा गवाईआ। नाम दुशाला देवे ओढण, सीस जगदीश हत्थ रखाईआ। जिस नूं सोचे कोई ना सोचण, बुद्धि चले ना कोई चतुराईआ। जग वेखे कोई ना लोचन, नैण अक्ख शरमाईआ। जिस नूं लभ्भदे कोटी कोटन, भज्जण थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे रंग रंगाईआ ।

भगत भगवान दा सांझा रिश्ता, आत्म परमात्म वज्जे वधाईआ। जो खेले खेल जुग चौकड़ी आहिस्ता आहिस्ता, हौली हौली भेव खुल्हाईआ। गुरमुखां नज़री आए दीदा दानिस्ता, दास्तान पिछली रिहा दुहराईआ। लेखा मुका के दोज़ख़ बहिश्ता, साचा दर इक्क सुहाईआ। जिथ्थे लेखा मंगे कोई ना फरिश्ता, अर्श फर्श पैंडा दए चुकाईआ। लहणा देणा जानणहारा राम वशिष्टा, विश्व आपणा हुक्म वरताईआ। निंदरा विच्च खोल्ह के दृष्टा, दृश आपणा दए जणाईआ। जुग चौकड़ी पिछली वेख फरिस्ता, गुरमुख गोद लए उठाईआ। सच प्रीती दे के निसचा, नीती अंदरों दए बदलाईआ। पूरब लेखा जिस जिस दा, दर दर घर घर जा चुकाईआ। जन्म जन्म दा काज नजिठदा, तन माटी वेख वखाईआ। अग्गे वेला नहीं करवट वाली पिठ्ठ दा, सन्मुख हो के नज़री आईआ। झगड़ा मुक्क गिआ हार जित्त दा, रंग इक्को दए रंगाईआ। दर्शन बख्श के सदा नित्त दा, निझ आत्म मेल मिलाईआ। प्यार कर अगम्मी पित दा, गुरमुख पूत गोद उठाईआ। लेखा मुका के जन्मां दी सिक दा, सिखर चोटी दए चढ़ाईआ। नव नौं चार पिच्छों विहार होया एकंकार इक्क दा, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। जिस दा गुर अवतार पैगम्बर लेखा गिआ लिखदा, शास्त्र सिमरत वेद पुरान देण गवाहीआ। सो मालक बणया गुरमुख पूरे सिख दा, जगत सिख्या विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। दीन दुनी किसे ना दिसदा, जग नेत्र नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

भगत भगवान सदा मीत, मित्रां विच्चों मित्र नज़री आईआ। जुग चौकड़ी बदलदे रहण रीत, नित्त नवित्त वेस वटाईआ। सांझा गौंदे रहण गीत, धुर दा नाम पढ़ाईआ। झगड़ा छड्ड के मन्दर मसीत, काया काअबे सोभा पाईआ। मेला मिल के हरि जगदीश, जगत वजौंदे रहण वधाईआ। वक्खरी निराली कर प्रीत, प्रीतम प्रीती विच्चों प्रगटाईआ। बैठे रहण सदा अतीत, त्रैगुण नेड़ कोई ना आईआ। जिस दी करदे रहण उडीक, अक्खरां विच्च ध्यान रखाईआ। सो साहिब आया नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। जन भगत दवारिउँ मंगे भीख, भिखारी हो के झोली डाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ दी करे आप तस्दीक, शहादत अवर ना कोई भुगताईआ। (१५ फग्गण श सं १ पूरन सिँघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगत भगवान आदि जुगादी बंधन, बन्दगी दी लोड़ रहे ना राईआ। आत्म परमात्म देवे साचा अनन्दन, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। धूढ़ी टिक्का मस्तक लाए चन्दन, निरगुण चांदनी चन्द जोती जोत जोत रुशनाईआ। साहिब स्वामी अन्तरजामी हो के लाए अंगन, अंगीकार खुद मुखत्यार इक्क अखवाईआ। लहणा देणा मूल चुकाए लोकमात वरभंडन, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ लेखा रहे ना राईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्दी धार आए मंगण, प्रेम प्रीती साची नीती आपणी झोली पाईआ। सच दवार एकंकार निरगुण निरवैर आए लँघण, जगत दवारका लेखा रहे ना राईआ। निरगुण निरगुण नाता आए गंढुण, सरगुण मेला मेले सैहज सुभाईआ। चरन धूढ़ी अमृत सर नुहाए साची गंगन, अंदर

बाहर गुप्त ज़ाहर दुरमत मैल रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सची सरनाईआ।

भगत भगवान आदि जुगादी मेला धुर दा, धुर मस्तक लेखा आप बणाईआ। जुग चौकड़ी मेला मिलदा रहे सचे सतिगुर दा, सति स्वामी शब्द अनामी इक्को बेपरवाहीआ। अन्तर अन्तर निरंतर साचा फुरना रहे फुरदा, मन वासना झगढ़ा दए चुकाईआ। ताल बणया रहे सुरत सवाणी शब्दी सुर दा, सोवत जागत इक्को रंग वखाईआ। लहणा देणा आदि जुगादि जुग चौकड़ी मुकौंदा रहे अनन्द पुर दा, पूरन ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। झगड़ा चुकौंदा रहे कलिजुग कूड़ी क्रिया अन्ध घोर दा, सति सतिवादी आपणा नूर कर रुशनाईआ। लेखा रहण ना देवे पंज चोर दा, ठगौरी मन ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कारज करे लोड़ दा, लोड़ींदा साजण दया कमाईआ।

जन भगतां मेला आदि अन्त, अन्तश्करन लेखा रहे ना राईआ। मेला मिलदा रहे गुरमुख साचे सन्त, सति सतिवादी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोड़ जुड़दा रहे धुर दे कन्त, निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा चलदा रहे इक्को मंत, मंतव सारे हल्ल कराईआ। रुत्त मौली रहे सदा बसन्त, फॅल्ल फुलवाड़ी पत्त डाली आप महकाईआ। भगत भगवान जोड़ा जुड़दा रहे विच्चों जीव जंत, जीवण जुगत आपणे हत्थ रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी वेख वखाईआ।

भगत भगवान इक्को गृह हुंदा रहे वास, निवास अस्थान मिले वडयाईआ। इक्को मन्दर हुंदा रहे प्रकाश, प्रकाशवान नूर खुदाईआ। बिन मंज़ल बणया रहे साथ, सगला संग आप जणाईआ। पूरब जन्म पूरी करदा रहे आस, आसा मनसा आपणे रंग रंगाईआ। निरगुण हो के वसदा रहे पास, पुशत पनाह आपणा हत्थ टिकाईआ। प्रेम प्रीती अंदर देंदा रहे शाबाश, शहनशाह हो के आपणी खुशी वखाईआ। झगढ़ा मुकौंदा रहे पृथ्मी आकाश, अकल कलधारी आपणी खेल वखाईआ। लेखे लौंदा रहे पवण स्वास, साह साह आपणा नाम जपाईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को दस्स के जाप, जामन हो के लए छुडाईआ। कोट जन्म दे मेट देवे पाप, मेहरवान हो के आपणा दरस कराईआ। तन माटी ख़ाकी करे पाक, पतित पुनीत दए बणाईआ। जुग चौकड़ी पूरा करे वाक, भविख्त लेखा आपणे हत्थ रखवाईआ। गुरमुख गुर गुर बणा साक, सज्जण हो के मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म वेख आपणी जात, पड़दा उहला दए चुकाईआ। भगत भगवान इक्को मन्दर अंदर धुर दा वास, दूजा गृह ना कोई वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लहणा देणा रक्खे आपणे हाथ, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाईआ। (२३ विसाख श सं २ ऊधम सिंघ)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆